International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.3 No.7 Nov – Dec 2022

सम्पोषित विकासः सिद्धान्त एवं चुनौतियाँ

डॉ गौरव कुमार मिश्र
सहायक प्राध्यापक, राजनीतिशास्त्र विभाग शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैकुण्ठपुर, कोरिया, छत्तीसगढ़
Corresponding Author- **डॉ गौरव कुमार मिश्र**
Email- drmishragk@gmail.com
DOI- 10.5281/zenodo.7426254

अभी हाल ही में शर्म उल शेख में सम्पन्न अंतर्राष्ट्रीय जलवायु शिखर सम्मेलन (काप-२७) में पर्यावरण के संबंध में वैश्विक चिंताओं पर पुनः ध्यान आकृष्ट किया है। इस सम्मेलन में अप्रत्याशित बदलाव के कारण गरीब देशों को हुए नुकसान की भरपाई हेतु एक कोष स्थापित करने और सम्मेलन में शामिल १९७ देशों ने फिर कार्बन उत्सर्जन में तेजी से कमी लाने का संकल्प लिया है। इस सम्मेलन में जलवायु परिवर्तन से लगातार दुनिया में हालातों के और बिगड़ने से उपजी वैश्विक चिंताओं ने संपोषित विकास की धारणा पर पुनः बल दिया है सतत् विकास की संकल्पना विश्व पर्यावरण एवं विकास आयोग १९८७ की देन है। इस आयोग की अध्यक्षता ग्रो बुटलैंड के नाम पर इस आयोग के प्रतिवेदन को 'बुटलैंड रिपोर्ट' कहा जाता है। यह रिपोर्ट 'आवर कॉमन फ्यूचर' (हमारा सामान्य भविष्य) शीर्षक से प्रकाशित हुई थी। इसके अंतर्गत यह तर्क दिया गया था कि संसार में प्राकृतिक संसाधनों का अक्षय भंडार नहीं है। अतः यह मांग की गई कि ''वर्तमान पीढ़ी को अपनी आवश्यकताएं इस ढंग से पूरी करनी चाहिए कि भावी पीढ़ियां अपनी आवश्यकताएं पूरी करने में असमर्थ न हो जाए।'' दूसरे शब्दों में इस रिपोर्ट के अनुसार ''धारणीय अथवा स्थायी विकास वह विकास है जिसके अंतर्गत भावी पीढ़ियों के लिए आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमताओं से समझौता किये बिना वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है।''

अतः पर्यावरण के सुरक्षा के बिना विकास को निर्वहनीय नहीं बनाया जा सकता। आर्थिक विकास और पर्यावरण सुरक्षा के मध्य वांक्षित संतुलन बनाए रखना ही निर्वहनीय या टिकाऊ विकास है।

वर्तमान में धारणीय विकास एक भूमंडलीय दृष्टिकोण बन गया है। 1992 ई० के पृथ्वी सम्मेलन में घोषित एजेंडा-२ (रियो घोषणा) में इसके प्रति पूर्ण समर्थन व्यक्त किया गया। २००२ में जोहान्सबर्ग सम्मेलन (रियो-१०) का मूल मुद्दा ही सतत् विकास था। ध्यातव्य है कि प्रथम पृथ्वी शिखर सम्मेलन (1992) के २० वर्ष पूरे होने के पश्चात में ब्राजील के रियो डी जेनिरियो में रियो २०- सम्मेलन का आयोजन किया गया था, जिसके घोषणा पत्र का शीर्षक 'द फ्यूचर वी वांट' था। इस सम्मेलन में भारत ने भी हरित अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल दिया। स्थायी विकास के पथ प्रदर्शक सिद्धान्त अधोलिखित हैं-

(१) पारिस्थितिकी मित्रवत प्रौद्योगिकी- उत्पादन प्रक्रिया के प्रत्येक क्षेत्र में पारिस्थितिकी मित्रवत प्रौद्योगिकी को अपनाकर निर्वहनीय विकास को अंगीकार करना।

(२) परियोजना मूल्यांकन- विकास मार्ग के अंतर्गत किसी भी परियोजना के मूल्यांकन में तीन म्;ईद्ध अर्थात् पर्यावरण सुरक्षा (Environmental Protection)] पारिस्थितिकीय संतुलन (Ecological Balance) एवं आर्थिक दक्षता (Economical efficiency) पर यथेष्ट जोर देना।

(३) उत्पादन का विकेन्द्रीकरण– स्थायी विकास के लिए विकेन्द्रीकरण करके इस क्षेत्र में जनसहभागिता को बढ़ाना।

(४) संसाधन संरक्षण– भूमंडलीय आधार पर समग्र जीवन चक्र का प्रबन्ध करके संसाधनों का प्रभावी संरक्षण करना।

(५) प्रभावशाली जवाबदेही तंत्र– पारिस्थितिकी संतुलन में किसी प्रकार के विक्षोभ उत्पन्न करने वाले के विरुद्ध सख्त कार्यवाही सुनिश्चित करना।

(६) पारिस्थितिकीय साक्षरता– इसके द्वारा वैश्विक पारिस्थितिकी संरक्षण चेतना का विकास करना।

(७) स्थायी विकास पर प्रभावी जनमत निर्माण में पर्यावरणविदों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, गैर सरकारी संगठनों की सहायता लेना।

(८) संसार के सभी देशों द्वारा पर्यावरण के संबंध में वैश्विक संस्थाओं, संधियों व प्रोटोकालों को पूर्ण मान्यता दिया जाना व उनका पूर्णतः पालन किया जाना।

सतत विकास मानव एक संतुलित विकास की बुनियाद है, इसके मूलभूत विचारों के अंतर्गत बहुआयामी तत्वों को समाहित किया गया है। यथा- नवीकरणीयता (Renewability), प्रतिस्थापन (Substitution),अंर्तनिर्भरता (Interdependence),अनुकलनशीलता (Adaptability) एवं संस्थागत प्रतिबद्धता (institutional commitment) आदि।

भारत में भी संपोषित विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास चल रहे हैं। भारत उन विकासशील देशों में आता है जहाँ पर्यावरण के संबंध में व्यापक जागृति आई है एवं स्थायी विकास हेतु सघन प्रयास किये गये हैं जिन्हें निम्न शीर्षकों के अंतर्गत देखा जा सकता है यथा-

वनारोपण व सामाजिक तथा कृषि वानिकी
मृदा संरक्षण व परती भूमि विकास कार्यक्रम
कृषि जलवायुविक प्रादेशीकरण
वॉटरशेड प्रबन्धन
शष्यक्रम एवं फसलचक्र
शुष्क कृषि विकास

इसके अलावा जीवमण्डल विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय अभ्यारण्य, जलग्रस्त भूमि संरक्षण, मैग्रोव संरक्षण, तटीय पारिस्थितिकी एवं मलीन बस्तियों में सुधार तथा प्रदूषण नियंत्रण के लिए विभिन्न प्रकार के कानून आदि को भी सतत् विकास की दिशा में हो रहे प्रयासों के अंतर्गत समाहित किया जा सकता है। वस्तुतः व्यापक दृष्टि सम्पोषित विकास के भावी भविष्य की कल्पना के दो रूप स्पष्ट पहचाने जा सकते हैं-

(१) अधिकतम सम्पोषित समाज- विकास के संदर्भ में यह एक ऐसे समाज की कल्पना है, जो पर्यावरण के साथ संतुलन बनाए रखना चाहती है परंतु सैद्धान्तिक स्तर पर व्यक्ति का प्रकृति पर प्रभुत्व तथा भौतिक एवं अन्य आवश्यकताओं की प्राथमिकता को मौलिक मान कर चलती है। विकास के इस सिद्धान्त को मानव केन्द्रित धारणा का समर्थन प्राप्त है।

(२) मिताहारी सम्पोषित समाज (Frugal Sustanable Society)– इसका समर्थन डीप इकोलॉजिस्ट ने किया है। यह धारणा उत्पादन, उपभोग, राजनीतिक ढांचों, रहन-सहन और आदतों में आमूल परिवर्तन की मांग करती है। मौलिक रुप में यह उत्पादन की वह धारणा है जो ऊर्जा के कम प्रयोग, अधिक शारीरिक श्रम, भौतिक वस्तुओं की मिताहारिता, व्यक्तिगत आत्म संतुष्टि तथा स्वैच्छिक मिताहारिता पर आधारित है। यह व्यक्ति के नैतिक उत्तरदायित्व पर ज्यादा बल देती है।इस सिद्धान्त के मूल मंत्र हैं- मिताहारिता, आत्मनिर्भरता तथा स्वैच्छिक सादगी।

एक लंबे समय से वैश्विक स्तर पर लगातार किये जा रहे प्रयासों, विभिन्न सम्मेलनों, कार्यवाहियों के बाद भी सम्पोषित विकास को व्यवहार्य में लाने के मार्ग में अनेक प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा हैं। ये चुनौतियां सैद्धांतिक एवं व्यवहारिक दोनो स्तरों पर हैं, जिनका निराकरण आवश्यक है।

सम्पोषित विकास की समस्याएं-

किसी भी उग्रवादी विचारधारा की तरह पर्यावरणवाद अपनी संपोषित विकास की धारणा को

व्यवहारिक रूप देने में कई तरह की सैद्धान्तिक समस्याओं का सामना कर रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि विश्व के विभिन्न राज्यों में स्थानीय स्तर पर कई पर्यावरण समूह एवं राष्ट्रीय स्तर पर हरित राजनीतिक सामाजिक समूह पिछले कई वर्षों से कार्यरत हैं। फिर भी राज्यों में विकास के संदर्भ में अभी भी औद्योगीकरण ही प्रधान है। वास्तव में सम्पोषित विकास की धारणा को लागू करने में अभी बहुत समस्याएं हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं-

1. सीमित वृद्धि का तर्क गलत है ;Thesis of limited growth is wrong)-

सम्पोषित विकास की धारणा का तर्क है कि सीमित विश्व व्यवस्था विकास की वर्तमान असीमित दर को संभालने की स्थिति में नहीं है। तथापि आलचकों का कहना है कि सीमित वृद्धि की धारणा का तर्क केवल सनसनी फैलाने वाला है। इसमें कोई ठोस सच्चाई नहीं है। इस संसार में भौतिक वस्तुओं के अभाव की समस्या को केवल परिष्कृत टेक्नोलॉजी द्वारा ही हल किया जा रकता है।इस टेक्नोलॉजी का उपयोग चाहे और श्रोतों की वृद्धि के लिए किया जाये अथवा हमारे पास जो कुछ है उनके बेहतर प्रयोग के लिए किया जाये। वास्तव में पर्यावरणवादियों ने विकास के संदर्भ में जो सीमायें समय-समय पर लगाई हैं उन सब को लांघा जा चुका है और अभी तक कोई विशेष दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा है। बल्कि आलचकों का विचार हैकि पर्यावरण की सुरक्षा के लिए उत्पादन वृद्धि बहुत आवश्यक है क्योंकि पर्यावरण सुरक्षा काफी महंगा कार्य है और इसके लिए पैसा केवल एक विकसित अर्थव्यवस्था द्वारा ही अर्जित किया जा सकता है। अतः विकास पर्यावरण का दुश्मन होने के बजाय इसका दोस्त है। अन्तर केवल यह है कि आज तक हम पर्यावरण सुरक्षा के प्रति लापरवाह रहे हैं। सही कानून और नियमन द्वारा विकास और पर्यावरण में सामन्जस्य लाया जा सकता है।

२. मिताहारी सम्पोषित विकास की धारणा खतरनाक है (Frugal Sustainable Development is Dangerous)

ओलोचकों का मत है कि मिताहारी सम्पोषित विकास व्यक्ति को सम्पूर्ण प्रकृति का एक अंग बनाकर उसमें और किसी पेड़-पौधे कीड़े में कोई अन्तर नहीं करता। एक आलोचक के अनुसार पर्यावरण विनाश के लिए सारी मानव जाति को जिम्मेदार ठहराने का अर्थ केवल व्यक्ति को इस धरती पर एक अभिशाप समझना ही नहीं है बल्कि इस अन्तर को भी भूलना है कि इसमें कुछ (जैसे अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनियां) लोगों की भूमिका ज्यादा विनाशक हो सकती है और कुछ की बिल्कुल नहीं। पर्यावरण समस्या का एक महत्वपूर्ण हल जनसंख्या नियंत्रण है जिसे लेकर भी काफी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। जैसा कि गोल्डस्मिथ लिखते हैं, यह बहुत आवश्यक हो गया है कि शताब्दी के अन्त तक छोटे परिवार (औसतन दो बच्चे प्रति परिवार) का उद्देश्य पूरा कर लिया जाये। इसके लिए वे व्यापक प्रचार आन्दोलनों, गर्भ निरोधन, गर्भपात जैसे तरीकों का सुझाव देते हैं। कुछ अन्य लेखक बच्चों के जन्म पर कानूनी प्रतिबन्ध अथवा टैक्स लगाने का सुझाव भी देते हैं। इसके अलावा जनसंख्या देशान्तरण के भी कई सुझाव दिये गए ताकि जो राज्य श्रोतों और भूमि के दृष्टिकोण से बड़े हैं, वे दूसरे राज्यों का कुछ बोझ हल्का कर दें। परन्तु यह सारे सुझाव जनसंख्या नियंत्रित करने के कुछ नैतिक और नस्ल-सम्बन्धी सवाल पैदा करते हैं जिन्हें सम्पोषित विकास के लेखक स्पष्ट नहीं कर पाये हैं।

3- अधिनायकवाद अथवा प्रजातन्त्र (Authoritarianism or Democracy)

मिताहारी सम्पोषित विकास के मन्दर्भ में एक अन्य समस्या इसकी राजनीतिक व्यवस्था की प्रकृति को लेकर है। आलोचकों का मत है कि सम्पोषित विकास को प्राप्त करने के लिए जीवनशैली और राजनीतिक परिवर्तनों के लिए कई स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र का बलिदान देने की आवश्यकता पड़ सकती है। वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था से कम्यून जीवन में परिवर्तन के लिये कई स्वतन्ताओं पर सीमा लगाने की आवश्यकता पड़ सकती है। समकालीन हरित राजनीतिक दल एवं आन्दोलन किसी भी प्रकार के तानाशाही हल के खिलाफ हैं। हरित राजनीतिक दल पर्यावरण और विकास के

उद्देश्यों को संसदीय बहुमत या स्थानीय स्वशासन द्वारा आम लोगों की व्यापक सहमति द्वारा प्राप्त करने में दृढ़ विश्वास रखते हैं। ध्यान देने योग्य बात यह है कि जहाँ हरित दल इस बात से सहमत है कि सम्पोषित विकास के लिये बहुत सी सीमायें लगाानी जरूरी है, वहां उनका विश्वास है कि आत्म-आरोपित सीमायें अधिक कारगर एवं स्थायी होगी बजाय जोर-जबरदस्ती के।

निष्कर्ष-

विकास के सन्दर्भ में प्यावरण की धारणा अभी निर्माण की प्रक्रिया में है। इसने मानव का इस भूग्रह के प्रति उत्तरदायित्व के प्रति ध्यान आकर्षित किया है और इस महत्व को दर्शाया है कि व्यक्ति और प्रकृति दोनों परस्पर अभिन्न रूप से जुड़े हुये हैं। राज्य का यह कर्त्तव्य है कि वह अपने कानून और नीति-निर्माण प्रक्रिया में इस सम्बन्ध को ध्यान में रखें। समकालीन राज्यों में हरित आन्दोलनों और पर्यावरण दबाव-समूहों ने पर्यावरण को एक राजनीतिक मुद्दा बना दिया है। इसकी अतिवादी मांगे-जैसे औद्योगीकरण को समाप्त करना, न्यूनतम उत्पादन, विकेन्द्रीकरण अथवा स्थानीय सामुदायिक जन-जीवन को बढ़ावा देना आदि-यदि आज पूरी नही हो रही तो इसका अर्थ यह नहीं है कि पर्यावरण का भविष्य अन्धकारमय है। उदाहरण के लिये सम्पोषित विकास के विभिन्न स्वरूपों के बारे में चर्चा होती रहती है परन्तु विभिन्न राज्यों द्वारा बनाई जा रही पर्यावरण नीतियों पर इनका कोई स्पष्ट प्रभाव दिखाई नहीं देता। तथापि पर्यावरण के सिद्धान्त का भविष्य सम्पोषित विकास के दोनों विकल्पों के बीच का रास्ता बनाने में है ताकि यह जन-चेतना तथा राजनीतिक नीतियों का अभिन्न अंग बन सके। जैसे-जैसे लोग प्रदूषण के विनाशकारी पक्षों के बारे में सचेत हो रहे हैं, यह आशा की जा सकती है कि भविष्य में पर्यावरण आन्दोलन विश्व भर में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

सन्दर्भ-

(१) गाबा, ओम प्रकाश : राजनीति-सिद्धान्त की रूपरेखा (नई दिल्ली, नेशनल पेपरबैक्स-२०२२)

(२) वरमानी, आर. सी. : समकालीन राजनीतिक सिद्धान्तों का परिचय (नई दिल्ली, गीतान्जली पब्लिशिंग हाऊस-२०११)

(३) विल किमिलिका : कन्टेम्परोरी पॉलिटिकल फिलासॉफी- ऐन इन्ट्रोडक्शन (ऑक्सफोर्ड चन्द्रा प्रेस-१९९०)

(४) यूनाइटेड नेशन सेक्रेटरी जर्नल्स- इन्डिपेन्डेन्ट एक्सपर्ट एडवाइज़री ग्रुप ऑन ए डाटा रिवोल्यूशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेन्ट-२०१४, undatarevolution.org

Research Discourse (ISSN 2277-2014) : An International Peer-reviewed Refereed Research Journal, **Pub. by :**SARDI, Vns, U.P.(INDIA)
Indexed by : **IIJIF, I2OR, SJIF, **I2OR Impact Factor :7.250, Vol . XII, No. IV, October - December 2022, Page No. : 102-103

fux|.k Hkä dfo;ks e vkfFkd p|ruk

MkO c'ts'k d|ekj ik.M;*

*सहायक प्राध्यापक, शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैकुण्ठपुर, जिला– कोरिया (छ.ग.)

lkjka'k भारत सदैव से धर्म प्रधान देश रहा है। हजारो–लाखों वर्षो से यहाँ विभिन्न धर्मावलम्बियों तथा मतों के लोगों का वास रहा है। निर्गुण भक्त कवियों ने अपनी पूजा पद्धति में या कहे भक्ति पद्धति में लोककल्याणकारी सामाजिक स्वरूप को अभिव्यजित किया है। इनका लक्ष्य काव्य के मानदण्डों से इतर सामाजिक जीवन और उसमें भी सामान्य से सामान्य जन–मानस के कल्याण हेतु साहित्य–सृजन करना था। इन्होंने पुरानी रूढ़ मान्यताओं को खण्डित कर स्वानुभव से निर्मित मान्यताओं द्वारा अपने प्रगतिशील होने का परिचय दिया। सभी निर्गुण भक्त कवियों ने सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, व राजनैतिक शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है और उसका जमकर विरोध भी किया है।

e|[; 'kCn : निर्गुण भक्त, आर्थिक चेतना, लोककल्याणकारी, धर्म, आर्थिक विषमता आदि।

निर्गुण भक्त कवियों के समय का समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था जो कि मूलतः आर्थिक विषमता द्वारा उत्पन्न हुआ था। अर्थ की हमारे जीवन में विशेष अनिवार्यता होती है। वह अर्थ ही है जो कि हमारे सम्पूर्ण जीवन को विभिन्न प्रकार के आरोहो–अवरोहों से युक्त करता है। साथ ही यह जीविका के लिए भी परमावश्यक होता है। जैसा कि हमारे शास्त्रों में भी व्यजित है कि पाप की पृष्ठभूमि में सामान्यतः भूख की ही अवस्थिति होती है।[1] धर्म के अनुष्ठान के लिए तथा सामाजिक कल्याण के लिए धन की आवश्यकता होती ही है। धर्मानुष्ठान शरीर द्वारा सम्भव है, तथा शरीर अन्न से पोषित होता है, इसलिए कबीर ने इस भाव को व्यंजित किया है कि भूखे पेट ईश्वरोपासना सर्वथा असम्भव है

Hk[k Hkxfr u dht ;g ekyk viuh yhtA[2]

समाज की आर्थिक विषमता के कारण समाज में अनेक प्रकार के दोष उत्पन्न होते है। इसके कारण धनिक और निर्धनों के बीच द्वेष की गहरी खाई खिचती चली जाती है। एक तरफ धनिक वर्ग ऐश्वर्यपूर्ण जीवन भोग रहा है तो निर्धन भोजन तथा तन ढकने हेतु फटे चिथड़ों के लिए भी मुहाल है। धनिक वर्ग ऊँचे प्रासादों में निवास करते हैं जबकि निर्धन टूटी झोपड़ी के लिए भी मुश्किल से जुगाड़ कर पाते हैं

ßdchj dgk xjfu;k Åp nf[k vkokIA
fNugj ?kj v: fNugj VkVhAA
?ku xjtr dil ekjh NkfrA[3]þ

कबीर धनिकों द्वारा निर्धनों की उपेक्षा से अत्यधिक क्षुब्ध होते हैं और उन्हें चेतावनी देते है कि किसी को हीन समझकर उसका अनादर कभी नहीं करना चाहिए। क्या पता कब वह तुमसे बलशाली होकर तुम्ही को रौंद डाले। यह कबीर की प्रगतिशील चेतना का एक महत्वपूर्ण आयाम है–

ßdchj ?kkI u uhfn;] tk ikÅ ry gkbA
MfM iM tc vk[k e] [kjk ngyk gkbAA[4]

कबीर कालीन समाज में उच्च वर्ग विलासिता में आकंठ इतना डूबा हुआ था कि समाज की निम्न वर्गीय जनता किस प्रकार कंगाल हो रही है और दुर्भिक्ष के संकटों से जूझ रही है इसका ख्याल करने वाला शायद कोई न था। इसका एक मात्र कारण आर्थिक विषमता ही प्रतीत होता है। जनता की स्थिति इतनी संकटपूर्ण थी कि उन्हें संतानों के स्नेह से भी वंचित होना पड़ा था

dkbl yjdk cpbl yjdh cp dkbAþ[5]

कबीर केवल धनिकों को ही नहीं बल्कि उननिर्धनों को भी फटकार लगाते हैं, जो बिना कर्म किए अपनापेट भरना चाहता है, जो निर्धन होने की दुहाई देकर शिक्षामांगने का जतन करता है। वे निर्धनों में आत्म–सम्मानजागृत कराने के उद्देश्य से कहते हैं कि–

ßHk[kk&Hk[kk D;k dj] dgk Iuko ykxA
HkkMk ?kfM ftfu efn;k] dkbl ij.k tkxA[6]

कबीर धन को महत्व देते हैं लेकिन आवश्यकता से अधिक अर्थ–संचय के वे विरोधी भी हैं। वे उतना ही धन आवश्यक मानते हैं जिससे कि परिवार का भरण–पोषण आसानी से हो जाय तथा साधु–सन्यासी, मित्र–बन्धुओं, अतिथि आदि को भी सम्मान के साथ खिलाया जा सके।

Ikbl bruk nhft,] tke dVEc Iek,A
e Hkh Hk[kk uk jg] Ikèk u Hk[kk tk;AA[7]þ

भक्त कवि रैदास ने मानव जीवन को हीरे की तरह अनमोल माना है। धन के पीछे अपने जीवन को नष्ट करने वाले मनुष्यों को ये कहते हैं कि धन तो जीवन की झूठी आशा है–

ß?ku thou dh >Vh vkIk
Ifr Ifr Hkk"k tu jnkIkAA[8]þ

कबीर के समान रैदास जी ने भी कर्मपूर्वक आजीविका चलाने की बात कही है। उनका कहना है कि श्रम करके जो अपनी जीविका, रोजी–रोटी चलाता है। उसकी यह नेक कमाई कभी निष्फल नहीं होती है

jfonkI Je dfj [kbfg T;k yk ikj cIk;
ud dekbl tm djb] dcg u fugdy tk,AA[9]

नानक धन के पीछे भागने वाले मनुष्यों को कहते कि क्यों व्यर्थ में धन के पीछे भागते हो। यह तो सब के मोह का परदा है–

èkuμ& èkuμ dgk iμdkjr ekbvk lHk dlVA
ue fcgμu ukudk gkr tkr lHkμ ?kjAA[10]

नानक जी कहते हैं कि धन व बल का अहंकार करने से कोई लाभ नहीं है। यह शरीर जिसका तुझे अभिमान है अपना नहीं है। राज्य, भूमि, धन आदि सदा केतेरे अपने नहीं है। तू किस किससे मोह कर रहा है ?

vkiu ruμ ugh tkdk xjckA
jkt fey[k ugh vkiu nj lkAA
vkiu ugh dk dM yiVkbvkA
vkiu uke lfrxj rμ ikbvkAA[11]

नानक धन से होने वाले विकारों की निंदा करते हैं क्योंकि समाज में जितने भी विकार व्याप्त हो रहे थे या आज हो रहे हैं उनमें अर्थ की भूमिका महत्वपूर्ण है। उन्होंने अपनी बातों को अन्य निर्गुण भक्तों की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

संत दादूदयाल ने कहा है कि राम ही मेरा रोजगार और सम्पत्ति है, उन्हीं के प्रसाद से परिवार का पोषण होता है। व्यर्थ में खाने–पीने की चिंता करने से क्या लाभ धन के लिए झीखने से क्या लाभ क्योंकि जो होना है वह तो होगा ही तथा जो कुछ जाना है वह जायेगा ही। इस विषय में चिंता करने से मनुष्य अपने चित्त को ही खायेगा यानी कि अशांत करेगा

nknw P;rk dh;k dN ugh P;rk tho dks [kkbA
gksuk gS lks gS jgk tkuk gS lks tkbAA[12]

राजधन का सुख सिर्फ कुछ दिनों का होता है, और जो मनुष्य इसके पीछे भागता है वह मूर्ख है। क्योंकि धन तो स्वप्नवत है, इसे नष्ट होने में जरा भी समय नहीं लगता–

nknw ek;k dk lq"k iap fnu] xj0;k dgk xokjA
lfiu ik;k jkt èku] tkr u ykxs ckjAA[13]

कवि सुन्दरदास अपने युग की आर्थिक असमानता से पूर्णरूपेण परिचित थे जहाँ उच्च वर्ग अनेक सुख–सुविधाओं में लिप्त था वहीं निर्धन वर्ग में दरिद्रता व्याप्त थी फलस्वरुप समाज में विभिन्न प्रकार के आपराधिक कर्म चोरी, लूटमार आदि निर्धन वर्ग की जनता द्वारा किए जा रहे थे। संस्कृत की प्रसिद्ध उक्ति है–बुभुक्षितः कि न करोति पापं यानी कि भूखा व्यक्ति क्या पाप नहीं कर सकता। कोई पेट की खातिर चोरी करता है. कोई लूटमार करता है, कोई हिंसा करता है–

iVfg dkj.k tho grS cgq iVfg ekal Hk[k dl ljk ihA
iVfg ywdj pkjh djkor] iVfg dxBfj xfg dkihAA[14]

इस प्रकार सभी निर्गुण भक्त कवियों ने धन की महत्ता उतनी ही स्वीकार की जितने में जीवन की मूलभूत आवश्यकता पूर्ण हो जाये। अपने प्रभु से अलग निर्गुण कवियों ने यदि अर्थिक सत्ता का अनुभव किया तो वो भी आध्यात्मिक रूप में तथा समाज में आर्थिक असमानतादूर करने के संदर्भ में क्योंकि वे समाज में भेदभावरहित वातावरण का निर्माण करना चाहते थे। सभी निर्गुण कवियो ने सांसारिक धन को तुच्छ बतलाते हुए राम नाम रूपी धन को अपनाने की सलाह दी है, क्योंकि इससे न तो अभाव उत्पन्न होता है और न ही कुबुद्धि बल्कि समाज में सबका सबके साथ समभाव बना रहता है जो कि सामाजिक गतिविधियों के सुचारू रूप से संचालन के लिए परमावश्यक है। कर्म करते हुए धनार्जन को श्रेष्ठ बताया निठल्लों की तरह बैठकर भिक्षाटन करना या अन्य अन्यायपूर्ण तरीकों से कमाये गए धन को तुच्छ बताया।

lUnHkZ %

1. पाण्डेय, डॉ० रामसजन, 1995, संतों की सांस्कृतिक संसकृति, उपकार प्रकाशन, दिल्ली संस्करण, पृ0 302
2. वही, पृष्ठ– 303 13.
3. श्यामसुन्दर दास, कबीर ग्रन्थावली, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी, संस्करण सं० 2055 वि०, पृ0 135
4. वही, निधा की अंग, पृ0 65
5. वही, परिशिष्ट, पृ0 199
6. वही, बेसास की अंग, पृ0 45
7. मिश्रा, डॉ0 भोलानाथ, हिन्दी संत साहित्य में प्रतिबिम्बित समाज, पृ0 259
8. सिंह, डॉ0 योगेन्द्र, संत रैदास, अक्षर प्रकाशन प्राइवेट लि०. दिल्ली संस्करण 1972 (फरवरी), पृ0 66
9. डॉ० धर्मवीर, गुरु रविदास, समता प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली संस्करण, 1997, पृ0 16
10. गुरु ग्रन्थ साहित्य सलोकु, पृ0 710
11. वही, रागु गडडी गुआरेरी महला 5 चउपदे दुपदे, पृ0 535
12. चतुर्वेदी, आचार्य परशुराम, दादू दयाल ग्रन्थावली, सांच को अंग, नगरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, पृ0 158
13. वही, माया कौ अंग, पृ0 127
14. गुप्ता, डॉ0 किशोरी लाल, सुंदर विलास–अधीर उराहने को अंग, कल्याणदास एण्ड ब्रदर्स, ज्ञानवापी, वाराणसी, संस्करण–1974, पृ0 119

हिंदी भाषा एवं साहित्य शिक्षण : एक अवलोकन

*डॉ0 बृजेश कुमार पाण्डेय**

भाषा से आशय होता है मानवीय व्यक्त वाणी से। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते अपनी अभिव्यक्ति के लिए भाषा का व्यवहार करता है। अनादि काल से यह क्रम चला आ रहा है। जब मनुष्य कंदराओं में रहता था तब भी वह अपनी अभिव्यक्ति दीवारों पर तरह– तरह के चित्र या चिन्ह बनाकर उन्हें प्रकट करता था। इन्हीं चित्रों या चिन्हों से क्रमशः लिपियों का विकास होता गया। भाषा को परिभाषित करते हुए विद्वानों ने कहा भी है कि– 'भाष्यते व्यक्तवाग् रूपेण अभिव्यज्येत इति भाषा' अर्थात् व्यक्त वाणी के रूप में जिसकी अभिव्यक्ति की जाती है उसे 'भाषा' कहते है।[1]भाषा वक्ता के विचार को श्रोता तक पहुंचाती है यानी कि वह विचार– विनिमय का साधन होती है। भाषा एवं साहित्य शिक्षण में इस विचार विनिमय की बहुत आवश्यकता होती है। भाषा शिक्षण के द्वारा विद्यार्थियों में भाषा के कौशलों जैसे कि– बोलना, पढ़ना, लिखने आदि का विकास किया जाता है तथा साहित्य शिक्षण के द्वारा सामाजिक तथा मानवीय संबंधों को समझने तथा समझाने का उपक्रम किया जाता है।

प्रारम्भ में कोई व्यक्ति भाषा सीखता है और फिर उस भाषा से सृजित साहित्य को पढ़ता है, लेकिन धीरे– धीरे वह देखता है कि भाषा और साहित्य में कोई विशेष अंतर नहीं है, भाषा से ही साहित्य बनता है। साहित्य शब्द का प्रयोग पहले मूलतः मनुष्य के भावों– रागों पर आधारित और उन्हें उद्वेलित– उद्दीपित करने वाली रचनाओं के लिए हुआ था, पर आज इसका अर्थ विस्तार इतना अधिक हो गया है कि हम कभी– कभी वाङगमय– मात्र को भी साहित्य कहने लगे है– यानी भाषा के माध्यम से जो भी व्यक्त या निर्मित होता है, सब कुछ साहित्य है। चाहे वह कविता कहानी हो या चाहे इतिहास, विज्ञान, समाज शास्त्र या कला का विवेचन, चाहे अखबार या सामान्य ज्ञान की पुस्तक ही क्यों न हो।[2] साहित्य ही भाषा– शिक्षण के लिए उपयुक्त सामग्री प्रदान करने का कार्य करता है। क्योंकि किसी भी साहित्य में भाषा का रचनात्मक रूप प्रदर्शित होता है और इसमें प्रयुक्त शब्द की अनेक अर्थ संभावायें होती है जिससे कि प्रत्येक पाठक अपना अलग– अलग अर्थ संधान करता है। इस प्रकार हम साहित्य के अनुशीलन से भाषा के बहुअर्थी बहुरूपी, कल्पनामूलक प्रयोग की सूझ पाते है, उसकी अर्थगत बारीकियों के प्रति सचेत– संवेदित होते है।[3]

संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को संघ की भाषा घोषित किया गया है। केवल कार्यालय ही नहीं वाणिज्य और व्यापार के क्षेत्र में, वैज्ञानिक और तकनीकी क्षेत्र, विधि के क्षेत्र, सामाजिक विज्ञान तथा संचार माध्यमों के क्षेत्र में भी हिंदी का व्यापक प्रयोग होता है। उसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी की व्यापकता है। हिंदी शिक्षण प्राथमिक स्तर की कक्षाओं से लेकर उच्च स्तर की कक्षाओं तक होता है। एक अध्यापक विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान करने के लिए जो भी तरीके काम में लाता है वे सब शिक्षण की विधियां कहलाती है।

***सहायक प्राध्यापक– हिंदी शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव स्नातकोत्तर महाविद्यालय बैकुण्ठपुर, जिला– कोरिया (छ.ग.) मो0 9479158743**

हिंदी भाषा के शिक्षण के निम्न लिखित उद्देश्य होते है :–

01) कोई भी व्यक्ति शुद्ध तथा स्पष्ट रूप ने अपने भावों एवं विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता पा सके। बिना भाषिक ज्ञान के शुद्ध उच्चारण सर्वथा असम्भव है। इससे न केवल भाषा के निश्चित रूप पर प्रभाव पड़ता है बल्कि शब्द का अर्थ ही परिवर्तित हो जाता है। एक बात और वह यह कि जो हम बोलते है वही लिखते भी है अतः उच्चारण का गलत प्रभाव लेखन पर भी पड़ेगा।

02) हिंदी भाषा शिक्षण के द्वारा हम अपनी सभ्यता और संस्कृति को संरक्षित करने के साथ– साथ उनका प्रसार भी कर सकते है।

03) किसी भी राष्ट्र में राष्ट्रीयता का भाव वहां की भाषा के माध्यम से ही विकसित किया जा सकता है और हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसके माध्यम से सम्पूर्ण देश वैचारिक आदान–प्रदान बड़ी सुगमता से करता है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक हिंदी किसी न किसी रूप में बोली और समझी जाती है।

04) हिंदी भाषा के माध्यम से सत्साहित्य के सृजन की प्रेरणा देना।

05) हिंदी भाषा के शिक्षण से समाज तथा छात्रों को भावानुकूल, भाषा प्रयोग, शब्दों, वाक्यांशों, लोकोक्तियों, गद्य– पद्य में निहित वैचारिक अनुभुतियों तथा आनंद से परिचित कराना।

06) हिंदी भाषा के शिक्षण से व्यक्ति या छात्रों को ये प्रमुख उद्देश्य प्राप्त करने में सहायता तथा समझ को विकसित करने में मदद मिलती है– ज्ञानात्मक उद्देश्य, कौशलात्मक उद्देश्य, समीक्षात्मक उद्देश्य, सृजनात्मक उद्देश्य और अभिवृत्यात्मक उद्देश्य।

आज के समय में व्यक्ति हिंदी सीख तो लेता है लेकिन शुद्ध हिंदी सीखने के लिए उसे हिंदी के भाषिक एवं व्याकरणिक ज्ञान से अवश्य परिचित होना पड़ेगा। इसके अभाव में वह हिंदी के साहित्य का सम्यक प्रकार से न तो आस्वादन कर सकेगा और न अनुशीलन ही।

जहां हिंदी के भाषिक शिक्षण के अन्तर्गत भाषा की शुद्धता से अवगत कराया जाता है, वर्तनी, वर्ण, व्याकरण आदि का अध्ययन कराया जाता है वहीं हिंदी में साहित्य– शिक्षण द्वारा ज्ञानात्मक के साथ– साथ भावात्मक और सौन्दर्यात्मक अभिवृत्ति का विकास कराया जाता है। साहित्य शिक्षण में संवेदना को महत्व दिया जाता है क्योंकि मानवीय शिक्षण के लिए संवेदना का होना अति आवश्यक है। हिंदी में साहित्य शिक्षण के लिए निम्न उद्देश्य हो सकते है :–

01. साहित्य में चित्रित मानव– जीवन, भाव, विचार आदि का दर्शन, ज्ञान और बोध कराना।[4]

02. साहित्य अभिव्यक्ति के विविध रूपों यथा– कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक इत्यादि से अवगत कराना।

03. मनुष्य की अभिप्रेरणा को जगाना।

04. साहित्य का अध्ययन मातृभाषा में करने से व्यक्ति को आनंद भी आता है तथा वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से बंधा रहता है।

05. प्रत्येक साहित्य का संबंध जीवन और समाज से अवश्य होता है। इसलिए साहित्य का अध्ययन करने से व्यक्ति समाज से परिचित होता है।

06. साहित्य शिक्षण से व्यक्ति नये– नये शब्द सीखता है और उनका वाक्य में प्रयोग कैसे हुआ है यह भी भली भांति सीखता है।
07. साहित्य के शिक्षण में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि प्रत्येक विद्यार्थी का शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक विकास अलग– अलग होता है जिसके कारण उनके सीखेन की गति भी भिन्न होती है।
08. विद्यार्थियों को संवाद के अवसर उपलब्ध कराना।

कोई भी भाषा हो भाषा ही साहित्य का आधार मानी जाती है वहीं दूसरी ओर साहित्य ही भाषा को सुरक्षित रखता है। भाषा का विकास पहले होता है उसके बाद ही साहित्य का। भाषा शिक्षण दक्षता केन्द्रित होता है किन्तु साहित्य शिक्षण संवेदना, सौन्दर्यानुभूति, उदात्तता आदि का विकास करता है।[5] भाषा शिक्षण में भाषायी कौशलों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भाषा के मुख्य चार कौशल है– सुनना, बोलना पढ़ना और लिखना। सुलेख या सुंदर लेख का भी हिंदी भाषा के शिक्षण में अपना महत्वपूर्ण स्थान है। सुंदर लेख ही किसी को अपनी ओर आकृष्ट करते है। सुलेख के संबंध में महात्मा गांधी ने कहा है कि– "मै नहीं जानता हूँ कि कब मुझमें यह विचार आया कि सुलेख शिक्षा का कोई आवश्यक अंग नहीं है, लेकिन यह विचार विलायत जाने तक मुझमें विद्यमान था। पीछे जब दक्षिण अफ्रिका में मैने वहीं जन्मे और शिक्षित वकीलों तथा नव युवकों की सुन्दर लिखावट को देखा तो मुझे अपने आप पर लज्जा आयी और अपने भूल पर मै बहुत पछताया। मैने देखा और बुरी लिखावट को सुधारना चाहा, लेकिन अब तक काफी देर हो चुकी थी। मै युवावस्था ने अपनी भूल को कभी भी ठीक नहीं कर पाया। मेरे उदाहरण से भी नव युवक व युवतियों को चेतावनी मिल जानी चाहिए कि सुलेख व्यक्ति की शिक्षा का एक आवश्यक पहलू है।"[6] सुलेख में अक्षर सुन्दर, सुडौल और अनुपातिक होने चाहिए। साथ ही सुलेख लिखने से शुद्ध– अशुद्ध का ज्ञान भी होता है, पंक्तिगत दूरी, विराम चिन्हों का सही जगह प्रयोग आदि भी सीखने को मिलता है।

हिंदी भाषा तथा साहित्य के शिक्षण में सूक्ष्म शिक्षण जिसे अंग्रेजी में माइक्रो टीचिंग कहा जाता है और चित्रकथाओं के माध्यम से शिक्षण देना भी बहुत महत्वपूर्ण है। सूक्ष्म शिक्षण जहां हर वर्ग के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है वहीं चित्रकथाओं का शिक्षण छोटे बालको के लिए विशेष लाभदायी होता है। सूक्ष्म शिक्षण विधि में कथा से संबंधित शिक्षण प्रक्रिया को छोटे– छोटे भागों में बांटकर उनका विश्लेषण किया जाता है। इस प्रकार के क्लास की अवधि 5 से 10 मिनट तक की होती है। डॉ0 पासी के शब्दों में कहे तो– "सूक्ष्म– शिक्षण के संबंध में सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यह अपेक्षित, अवलोकनीय, मापन– योग्य और नियंत्रण योग्य शिक्षण कौशलों के विकास का अवसर देता है।[7] वहीं दूसरी ओर छोटे बालकों को चित्र अधिक पसंद होते है, उन्हें चित्रों को दिखाकर कहानी आदि आसानी से समझाई जा सकती है। इस विधि से उनकी कल्पना तथा चिंतन शक्ति का विकास होता है।

इन सबके अतिरिक्त विद्यालयों और महाविद्यालयों आदि में विविध साहित्यिक क्रियाओं के आयोजन से भी भाषा तथा साहित्य शिक्षण को सबल बनाया जा सकता है। इन साहित्यिक क्रियाओं का आयोजन विद्यालय में भी या विभिन्न विद्यालयों के बीच भी कराया जा सकता है। इन आयोजनों में सुलेख लेखन, निबंध लेखन, कहानी लेखन, भाषण ,कविता आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की जा सकती है। किसी टॉपिक पर वाद–

विवाद भी कराया जा सकता है। इसके लिए एक साहित्यिक समिति का गठन प्रत्येक विद्यालय में किया जाना चाहिए जिससे कि वह समिति समय– समय पर विविध आयोजन सम्पन्न करे।

अंत में हिन्दी साहित्य शिक्षण के दो बिन्दुओं की और चर्चा आती है। वे हैं– गद्य शिक्षण और पद्य या काव्य शिक्षण। यहां एक बात यह ध्यान देने की है कि गद्य में प्रायः उन विषयों को लिया जाता है जिनका संबंध चिंतन से होता है। गद्य पढ़ने का प्रमुख उद्देश्य छात्रों में पढ़ने या वाचन की योग्यता का विकास करना है जिससे कि वे वैचारिक अभिव्यक्ति में सफल हो सके। वाचन में भी आरोह– अवरोह का विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। वही पद्य शिक्षण में विशेष सावधानी अपेक्षित है क्योंकि कविता ने रस, छन्द, अलंकार, काव्य शैलियां, आदि रहती है, जिससे सर्वप्रथम बालकों को परिचित करना उसके बाद ही पाठ में प्रवेश करना। ध्यान रहे काव्य पढ़ाने का लक्ष्य भाषा सिखाना नहीं बल्कि आनंद की प्राप्ति है। कविता की वृत्ति रागात्मक होती है और वह कल्पना तथा जीवन से भाव ग्रहण करने आनंद की अनुभूति कराती है। इसलिए कविता का पाठ मधुर और सस्वर होना चाहिए जिससे विद्यार्थी उसके संवेग और माधुर्य को पकड़ सके। कवि और कक्षा में तादात्मय कर देना ही सफल अध्यापक की विशेषता हे।

इस प्रकार हम देखते है कि भाषा को दो रूपों में पढ़ाया जाता है– प्राथमिक या माध्यमिक कक्षाओं में भाषा के रूप में तथा उच्चतर माध्यमिक या उच्च कक्षाओं में साहित्य के रूप में। भाषा और साहित्य का संबंध अटूट है। भाषा तथा साहित्य के शिक्षण में संश्लेषणात्मक तथा विश्लेषणात्मक दोनों ही प्रणालियों का उपयोग किया जाता है। हिंदी का ज्ञान देने के लिए पहले वर्णमाला का ज्ञान, उसके बाद शब्द ज्ञान तथा उसके बाद वाक्य का ज्ञान कराया जाता है किन्तु विश्लेषणात्मक प्रणाली में पहले वाक्य सीखकर उसके बाद शब्द तथा अंत मतें वर्णो का ज्ञान दिया जाता है। भाषा का शिक्षण भाषिक क्षमताओं, योग्यताओं, दक्षताओं एवं कुशलता के विकास के लिए किया जाता है तथा साहित्य का शिक्षण भाषा के सौन्दर्य तत्वों के बोध, भाषा के व्यंग्यार्थ आदि से अवगत कराने के लिए किया जाता है। साहित्य का सृजन करते समय भाषा एक परिष्कृत रूप धारण कर लेती है और अपने सामान्य स्वरूप का त्याग कर देती है। हिंदी के शिक्षण में विद्यार्थियों को क्रियाशील बनाने के लिए वार्तालाप, प्रश्नोत्तर, संवाद, वाचन आदि क्रियाओं का समावेश अपने शिक्षण को और अधिक उत्कृष्ट करने के लिए करना चाहिए।

सन्दर्भ :–

1. डॉ0 कपिल देव द्विवेदी– भाषा विज्ञान एवं भाषा– शास्त्र, षोडश संस्करण– 2019 ई0 विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी। पृष्ठ– 30
2. भाषा शिक्षण, हिंदी भाग– 2, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,पहला संस्करण जुलाई – 2019, पृष्ठ– 207
3. वही, पृष्ठ– 212
4. वही, पृष्ठ– 215
5. http://egyankosh.ac.in//handle/ 123456789ध्47132
6. हिंदी शिक्षण – रीता चौहान, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा– 2, संस्करण– 2018/19 पृष्ठ– 121
7. वही, पृष्ठ– 132

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

लोक संस्कृति पर आधारित ग्रामीण धरोहर पर्यटन की संभावनाएँ (उमरिया जिले के विशेष संदर्भ)

डॉ. संदीप सिंह
शासकीय शिल्फिली कालेज, सूरजपुर, (छ.ग.)

शोध–सारांशः

भारत प्राचीन सभ्यताओं वाला देश है। यहाँ की सभ्यता एवं लोक संस्कृति प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। यहाँ पर सभी धर्मों, वर्गों, जातियों और विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग एक साथ मिलकर रहते हैं, जो एकता एवं शांति का प्रतीक है। हमारे देश में सारे संसार की झलक देखी जा सकती है, इसी कारण क्रेसी महोदय ने इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा प्रदान की है। हमारा देश आरंभ से विदेशी पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस देश में 'अतिथि देवो भवः' की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।[1] इन्हीं बिन्दुओं की पूर्ति हेतु शोध पत्र में विवेचित करने का प्रयास है।

मुख्य शब्दः उमरिया, पारिस्थितिकी, पर्यटन, ग्रामीण, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, स्थल, विदेशी आध्यात्मिकत संभावनाएँ इत्यादि।

प्रस्तावनाः

लोक संस्कृति पर आधारित ग्रामीण धरोहर पर्यटन से आशय यह है कि पर्यटक या शैलानी शहर के भव्य इमारतो, ऐतिहासिक स्थलों एवं मनोरम स्थलों के साथदृसाथ देश के ग्रामीण अंचलों की प्राकृतिक छटा व सांस्कृतिक विरासत का अनुभव आनन्द प्राप्त कर सके।

किसी भी देश की संस्कृति वहाँ के विकास की परिचायक होती है। सांस्कृतिक आकर्षण अपने आप में एक अलौकिक आकर्षण होता है। इस आकर्षण की प्राप्ति हेतु बड़ी संख्या में लोग इन सांस्कृतिक केन्द्रों पर पर्यटन के उद्देश्य से ओ है। इन सांस्कृतिक आकर्षणों में लोक संस्कृति का अपना एक अलग महत्व होता है। लोक संस्कृति के अन्तर्गत लोक कलायें, लोक नृत्य, लोक रंजन, लोकगीत, लोकोत्सव, लोक आभूषण आदि होते है।

उमरिया जिले में बहुसंख्यक जनसंख्या ग्रामीण है और उसमें भी आदिवासियों का प्रतिशत अधिक है। इनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति व लोकाचार है जो अभी भी वाह्य प्रभावों से मुक्त है। इनकी सांस्कृतिक विशिष्टता से उत्पन्न आकर्षण इस प्रकार है–

(i) लोकोत्सव –

भारत उत्सवों का राष्ट्र है और उससे से क्षेत्र भी अछूते नहीं है। बांधवाधीश के मंदिर रामनवमी के कृष्ण जन्माष्टमी बड़ी धूम–धाम से मनाये जाते हैं। इसके साथ ही होली, दीपावली, कजलिया, हरतालिका तीज, विशिष्ट ग्रामीण संस्कृति की झलक दिखती है।

(ii) लोकगीत–ग्रामीण क्षेत्रों में गाये जाने वाले बिरही, दादरा, कोलदहंका, सुआगीत, गारीगीत, विवाहगीत, होली गीत, भगत गीत आदि विदेशी पर्यटकों के लिए एक महत्वपूर्ण आकर्षण हो सकते है।

(iii) लोकनृत्य–आदिवासियों के करमा नृत्य, रीना नृत्य, शैला नृत्य, सुआ नृत्य, बिरहा, गम्मत, कोलदहंका आदि नृत्य पर्यटकों को आकृष्ट कर सकते हैं।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

(iv) उत्सव, त्योहार एवं मेले –

भारत उत्सवों का देश है, जीवन के हर खुशी के क्षण को हम पूर्ण आनन्द के साथ जीना चाहते हैं और यह अवसर हमें उत्सव त्यौहार व मेले देते हैं। लोकोत्सव किसी भी अंचल के लोक के वे उत्सव है जो लोक द्वारा लोकहित के लिए आयोजित किये जाते हैं। ऐसे उत्सवों के समय समस्त लोग एक विशेष कर्म से गतिशील होकर अद्‌भुत एकता की बानगी पेश करते हैं। लोकोत्सवों में रहन सहन वेश भूषा, खान पान, रीति रिवाज और चाल चलन की झांकी देखने को मिलती है। बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान बघेलखण्ड के अन्तर्गत आता है और यदि वर्तमान लोक जीवन में बघेली संस्कृति की तस्वीर देखनी हो तो वह लोकोत्सव के समय देखने को मिलती है।

प्रमुख लोकोत्सव व त्योहार

यहाँ पर सामान्यत–हिन्दू धर्म के ही अनुयायी है। अतरू उनके उत्सवों व त्यौंहारों को अधिकता है। मुस्लिम धर्म के त्यौहार भी आयोजित किया जाता है। यहाँ के प्रमुख उत्सव व त्यौहार निम्नलिखित है।

धार्मिक त्यौहार

(i) चौत्र नवदुर्गा या बासतेय नवरात्रि –

चौत्र शुक्ल प्रतिप्रदा से चौत्र शुक्ल नवमी तक नौ दिन माँ शक्ति के नवरूपों का पूजन अर्चन किया जाता है। ग्रामीण जन परीबा (प्रतिपदा) को जौ बोकर नौ दिन पूजा करते है। आठवें दिन अठवाइन, नारियल आदि चढ़ाकर पूजा की जाती है। साथ ही बरूआ, खेरमाइन व बड़का देव की पूजा की जाती है। नवें दिन विसर्जन कर दिया जाता है।

(ii) होली–माघ महीने में होली गाड़ दी जाती है। फाल्गुन चतुर्दशी का गांव का मुखिया होलिका दहन करता है। अगले दिन होली खेली जाती है।

(ii) नया वर्ष–भद्रपद शुक्ल पक्ष में जब बांस व फूल पक जाते हैं, तब घर की सफाई करते हैं पूड़ी में रखकर सरई साजा वृक्ष में स्थित कुल देवता की पूजा करते है। लड़के शाम को सैला नृत्य करते है वे लड़कियाँ सुआ गीत गाती है।

(iv) बिदरी पूजा–जेष्ठ पूजा में एक टोकरी में धान, कोदों, अरहर, तिल आदि बोने का बीज ठाकुर देव को चढ़ते है व मुर्गी के बच्चों को दाना चुगाकर बलि देते हैं। यहाँ मनाये जाने वाले अन्य प्रमुख उत्सव व त्यौहार निम्न सारणी में प्रस्तुत है–

सारणी क्रमांक 01 : मनाये जाने वाले त्यौहार व उत्सव

क्रमांक	त्योहार/उत्सव	तिथि
1.	गणतंत्र दिवस	26 जनवरी
2.	मकर संक्रांति	पौष शुकल पक्ष
3.	पुसौल पौष	
4.	ईद–उल–जुहा (बकरीद)	मुस्लिम मास जिल्हज (फरवरी)
5.	गणेश चतुर्थी	माघ शुक्ल चतुर्थी
6.	बसंत पंचमी	माघ शुकल पंचमी
7.	माघी पूर्णिमा	घाघ पूर्णिमा
8.	मुहर्रम	मुस्लिम मास मुहर्रम (मार्च)

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

9.	महाशिवरात्रि	फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी
10.	होली	फाल्मुन पूर्णिमा
11.	बसंतेय चैत्र नवरात्रि	चैत्र शुक्ल पक्ष
12.	रामनवमी	चैत्र शुक्ल पक्ष
13.	हनुमान जयी	चैत्र पूर्णिमा
14.	वट सावित्री आवस्या	चेष्ठ कृष्ण चतुर्दशी
15.	गंगा दशहरा	जेष्ट शुक्ल दसवीं
16.	ईद–उल–मिलादुन्नवी	मुस्लिम मास रवि उलाव्वल
17.	महावीर जयंती	चैत्र शुक्ल पूर्णमा
18.	बुद्ध पूर्णिमा	बैशाख पूर्णिमा
19.	गुरु पूण्रिमा	आषाढ़ शुकल पूर्णिमा
20.	हरियाली अमावस्या	श्रावण कृष्ण अमावसया
21.	स्वतंत्रता दिवस	15 अगस्त
22.	रक्षा बंधन	श्रावण पूर्णिमा
23.	कजलिया	भाद्रप्रद कृष्ण प्रतिपदा
24.	हलषष्ठी	भाद्रपद कृष्णषष्ठी
25.	श्री कृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण अष्टमी
26.	हरतालिकातीज	भाद्रपद शुक्ल तृतीय
27.	अनन्त चतुर्दशी व्रत	भ्रपद शुकल चतुर्दशी
28.	मातृनवमी	आश्विन कृष्ण नवमी
29.	पितृमोक्ष अमावस्या	आश्विन कृष्ण नवमी
30.	शारदेय नवरात्रि	आश्विन शुक्ल पक्ष
31.	विजय दशमी	आश्विन शुकल पक्ष
32.	रमजान व्रत	मुस्लिम माह रमजान (अक्टू. नव.)
33.	ईद–उल–फितर	मुस्लिम माह सव्वाल नवम्बर
34.	दीपावली	कार्तिक अमावस्या
35.	देव उठनी एकादशी	कार्तिक शुक्ल एकादशी

बांधवगढ़ पूर्व में बघेलखण्ड का केन्द्र बिन्दु रहा है। यहाँ के रीति रिवाज परम्परायें बघेली लोक संस्कृति का अभिन्न अंग है। यहाँ जीवन के प्रत्येक काल में अच्छे बुरे प्रत्येक अवसर हेतु भिन्न रीतियाँ है। गर्भधारण से लेकर मृत्यु पर्यन्त इन रीति रिवाजों व परम्पराओं का पालन किया जाता है। यहाँ के प्रमुख रीति रिवाज है गोद भराई, छठी, बरहौं, मुंडन, कनछेदन, बरूआ, विवाह, द्विरागमन, दाह संस्कार, कर्म व तेरहवी आदि।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

इसके अतिरिक्त पर्दा प्रथा, पति का नाम न लेना, जैठ (पति का बड़ा भाई) का नाम न लेना, कुछ निश्चिम दिनों में किसी विशेष दिशा में न जाना, पिता के जीवित रहते मूंछ न मुड़ाना, विधवा द्वारा कोई श्रृंगार न करना आदि अनेक परम्परायें यहाँ प्रचलित है। आज भी मनुष्य साधारणतः कानूनों का उल्लंघन कर सकता है लेकिन परम्पराओं के विरूद्ध कार्य का साहस नहीं कर सकता।

जनजातीय जीवन पर आधारित ग्रामीण धरोहर पर्यटन की संभावनायें–

उमरिया जिला म.प्र. राज्य का जनजातीय बहुल जिला है। जिले की कुल जनसंख्या का 48.2 प्रतिशत भाग जनजातियों का है। यहाँ की कुल जनजातीय जनसंख्या 2001 में 227250 थी। जिले के मानपुर एवं पाली विकासखण्ड में जनजातीय जनसंख्या का वितरण करकेली की तुलना में सघन है। यहाँ की जनजातियों में प्रमुख गोड़, बैगा कोल है। यहाँ के आदिवासी सघन वन्य प्राणी पहाड़ियों, पठारों, नदी के किनारे एवं घने वनों के किनारे बसे है। यह आज भी अपनी अधिकांश आवश्यकता की पूर्ति इन वनों से करते हैं। यहाँ की जनजातियों में प्राकृतिक पर्यावरण से गहन सम्बन्ध देखने को मिलता है। वनों पर शासकीय अंकुश एवं घटते वनों से इनकी दिनचर्या प्रभावित हुई है। ये लोग प्रायः सूती मोटे वस्त्र पहनते हैं तथा मोटे अनाजर कोदौ, कुटकी, मक्का, ज्वार कन्दमूल, बाजरा चना, रमतिला का सेवन करते हैं। प्रोटीन की प्राप्ति हेतु होती है मांस व मछली को भोजन में सम्मिलित करते है। जनजातीय महिलाएँ मूँगा और गिलट तथा ताँबे के आभूषण पहनती है। सम्पन्न परिवार की औरते चाँदी के जेवरात भी पहनती है। गोड़ युवतियाँ में गोदने की प्रथा पाई जाती है। इन युवतियों में हाथो तथा मुहँ पर गुदाने का अत्यधिक प्रचलन है। गोड़ युवतियों में साज–सज्जा के प्रति रूझान देखने को मिलता है। त्यौहार उत्सव व मेलों मे युवक व युवतियाँ साज–सज्जा के साथ आते है तथा लोक गीत नृत्य आदि का प्रदर्शन करते है।

जनजातीय जीवन पर्यटकों को आकर्षित करता है। जनजातियों में आखेट करना, आखेट के हथियार, पूजा स्थल, तीर–धनुष से शिकार करने की प्रथा प्रचलित है। ये लोग परम्परा प्रेमी होते है। धर्म के प्रति इनमें अटूट आस्था होती है। धार्मिक नृत्यों के समय समूह के लोग एकत्रित होते है। स्त्रियाँ सामूहिक गीत गाती है तथा परम्परागत नृत्यों का प्रदर्शन करती है। गोड़ युवक ढोलक आदि बाहय यंत्रों को बजाते हुए नृत्य करते है। जो बड़ा ही रोंमाचकारी तथा मन को मुग्ध करने वाला होता है।

यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिये यह आकर्षण का केन्द्र बिन्दु होता है। यही कारण है कि बांधवगढ़ आने वाले विदेशी पर्यटक जनजातीय लोक संस्कृति का आनन्द लेने के लिए आस–पास के जनजातीय गाँवों में जाते है । घरेलू तथा विदेशी पर्यटकों का इस ओर बढ़ते हुए रूझान को देखते हुए जिले मे जनजातीय जीवन तथा जनजातीय लोक संस्कृति को पर्यटन से जोड़ा जा सकता है। जनजातीय जीवन पर आधारित पर्यटन की संभावनायें बांधवगढ़ के आस–पास स्थित गाँवों, ताला, मानपुर, पाली आदि में पायी गई है। आवश्यकता यह है कि इस क्रिया को पेशेवर ढंग से पेश किया गया । जनजातीय जीवन पर आधारित पर्यटन केन्द्रों में देशी भोजन, लोकगीत, नृत्य, पूजा–पाठ, त्यौहार उत्सव आदि का प्रदर्शन कर न केवल विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया जा सकता है बल्कि इनकी लोककलाओं को सरंक्षित करने का सबसे अच्छा साधन सिद्ध हो सकता है । आवश्यकता यह है कि जनजातियों के बीच पर्यटन के महत्व को बताया जाय तथा पर्यटकों को मित्र के रूप प्रस्तुत किया जाय। इसके लिये पेशेवर ढंग से प्रशिक्षण की विशेष आश्यकता है।

अन्य ग्रामीण धरोहर पर आधारित पर्यटन की संभावनाएँ–बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के आतंरिक क्षेत्र व इसकी सीमा के बाहर के अन्य प्रमुख पर्यटन आकर्षण इस प्रकार है

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

(i) चार्जर्स प्लेस (चार्जर की याद में)–चार्जर बांधवगढ़ के शेरों की पहचान एक ऐसा शेर जो लगभग एक दशक तक टूरिज्म जोन मे पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र रहा। 29 सितम्बर 2000 को उसकी मृत्यु के पश्चात् उसे इस स्थान में दफना दिया गया। एक बार उसे देख चुके पर्यटन उसे भुला नहीं पाते व उसके अंतिम स्थान को देखने चले जाते है।

(ii) चन्दन दाई मंदिर –ताला कस्बे से पूर्व दिशा में 4 किमी. की दूरी पर है–ग्राम बिझरिया, इसी ग्राम में यह प्राचीन मंदिर स्थित है

(iii) चेंचपुर जल प्रपात–ताला सें 45 किमी. दूर दक्षिण पूर्व दिशा में राष्ट्रीय उद्यान सीमा के निकट जोहिला नदी पद यह जल प्रपात स्थित है। यद्यपि इस प्रपात की ऊंचाई अधिक नहीं तथापि इसका सौन्दर्य अप्रतिम है।

(iv) बमेरा बांध–बांध स्थित है। पनपथा अभ्यारण्य के अन्तर्गत ताला से 12 किमी. की दूरी पर यह सुन्दर।

(v) मझौली बांध–ताला पनपथा रोड पर ताला से 16 किमी. की दूरी पर यह बांध स्थित है। पक्षियों को देखने के लिए यह स्थान बहुत उपयुक्त माना जाता है।

(vi) बाघेला संग्राहलय–महाराजा रीवा श्री पुष्पराज द्वारा यह संग्रहालय खोला गया है जो ताला में बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के मोड के ठीक सामने स्थित है। इसमें बांधवगढ़ किले व रीवा राजाओं की अनके वस्तुयें प्रदर्शित है। यहाँ प्रदर्शित प्रमुख वस्तु है–

निष्कर्षत

यह कहा जा सकता है कि पर्यटन एवं लोक संस्कृति के विकास को तेजी के साथ बढ़ाने पर बल देने की आवश्यकता है जिससे इस कार्य द्वारा न केवल इस उद्योग को डूबने से बचाया जा सकता है बल्कि हजारो शिल्पकारों को रोजगार प्रदान कर इस विरासत को सरंक्षित किया जा सकता है। आवश्यकता यह है कि शिल्पकारों को आर्थिक व शासकीय सहायता प्रदान कर शिल्पकारों द्वारा बनी वस्तुओं की उचित बाजार की व्यवस्था शासकीय स्तर पर पेशेवर ढंग से प्रस्तुत की जाय। जिससे उनके श्रम का उचित मूल्य मिल सके और रोजगार को बढ़ावा मिल सके। ऐसा होने पर स्थानीय ग्रामीणों को अपने घर के आस–पास रोजगार मुहैया हो सकेगा और उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार हो सकेगा और अन्तिम पायदान पर खड़े व्यक्ति को पर्यटन एवं लोक संस्कृति के मुख्य धारा से जुड़कर अपने पारिवारिक दायित्वों को पूर्ण कर सकेगा।

संदर्भ

[1]. सिंह बी.पी. एवं सिंह सुमन्त (2000) मध्यप्रदेश में पर्यटन, आदित्य प्रकाशन बीना, पेज–2

[2]. पटेल, डॉ. सुधीश कुमार, पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष, 54 अंक–7 मई 2008 पृष्ठ 12

[3]. पाण्डे, गिरीश चन्दा, अतुल्य भारत में ग्रामीण पर्यटन, कुरूक्षेत्र, वर्ष, 54, अंक–7 मई 2008 पृष्ठ 1

[4]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा पेज–2

[5]. पटेल, डॉ. सुधीश कुमार, पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष 54, अंक–7 मई 2008 पृष्ठ–12

[6]. कोरी, राजबहादुर (2006)बघेलखंड में पारिस्थितिकी पर्यटन, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध, अवधेशप्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा।

[7]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र.सिंह विश्वविद्यालय रीवा–4

[8]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र.सिंह विश्वविद्यालय रीवा पेज–5

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, March 2023
Impact Factor: 7.301

[9]. अवस्थी एन.एम. एवं तिवारी, आर.पी. (1995) पर्यावरण भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–161

[10]. अवस्थी एन. एम. एवं तिवारी, आर.पी. (1995) पर्यावरण भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–161

[11]. सिंह, नारायण (1993) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के मूलतत्व तारा बुक एजेंसी वाराणसी पृष्ठदृ31 12 सिंह, नारायण (1993) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के मूलतत्व तारा बुक एजेंसी वाराणसी पृष्ठ–31

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

उमरिया जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की संभावनाएँ

डॉ. संदीप सिंह
शासकीय शिल्फिली कालेज, सूरजपुर, (छ.ग.)

शोध–सारांशः

भारत प्राचीन सभ्यताओं वाला देश है। यहाँ की सभ्यता एवं संस्कृति प्राचीन काल से ही समृद्ध रही है। यहाँ पर सभी धर्मों, वर्गों, जातियों और विभिन्न भाषा बोलने वाले लोग एक साथ मिलकर रहते हैं, जो एकता एवं शांति का प्रतीक है। हमारे देश में सारे संसार की झलक देखी जा सकती है, इसी कारण क्रेसी महोदय ने इसे उपमहाद्वीप की संज्ञा प्रदान की है। हमारा देश आरंभ से विदेशी पर्यटकों के लिये आकर्षण का केन्द्र रहा है। इस देश में 'अतिथि देवो भवः' की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है।[1] इन्हीं बिन्दुओं की पूर्ति हेतु शोध पत्र में विवेचित करने का प्रयास है।

मुख्य शब्दः उमरिया, पारिस्थितिकी, पर्यटन, ग्रामीण, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, स्थल, विदेशी आध्यात्मिकत संभावनाएँ इत्यादि।

प्रस्तावनाः

आम देशी–विदेशी पर्यटकों को शहरी जीवन शैली पसंद नही आ रही है और वे शोरगुल व प्रदूषण से दूर ग्रामीण एवं पर्यावरणीय पर्यटन की ओर रुख कर रहे है। अब पर्यटन का अभिप्राय बड़े शहरों के ऐतिहासिक स्थल एवं इमारते ही नहीं बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों का प्राकृतिक सौन्दर्य, पशु–पक्षी, ग्रामीण क्षेत्रों की लोककलायें, एवं लोक संस्कृति और सांस्कृतिक विरासत को समझना भी शामिल है। हमारे देश के ग्रामीण स्थल दूसरे देशों की तुलना में सस्ते और प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण है। यहाँ पर हर मौसम में पर्यटन का लुत्फ उठाया जा सकता है। यही कारण है कि सादगी, ईमानदारी, खातिरदारी और खुले दिल से मेहमाननवाजी देखकर पर्यटक अपने आप गाँवो की तरफ खिंचे चले आते हैं। यह भी सच है कि कई विदेशी पर्यटक शांति और आध्यात्मिकता की खोज में भारत आते हैं और यहाँ की संस्कृति को अपनाकर यही रच–बस जाते है ।

आज ग्रामीण धरोहर पर्यटन एक बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है।[2] मध्यप्रदेश के पर्वतीय व प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण पर्यटन स्थलों की तरफ सैलानियों के आकर्षण को देखते हुए प्रदेश के दूर–दराज क्षेत्रों में सड़क, बिजली, पानी और संचार के साधनों का तेजी से विकास किया जा रहा है, जो भारत निर्माण का जीता जागता उदाहरण है। विदेशी पर्यटकों के आकर्षण के कारण कुटीर उद्योग हस्तकला उद्योग, काशीदाकारी व दस्तकारी के परम्परागत कारोबार को पुनः बढ़ावा मिल रहा है, जिससे गाँवों में नये रोजगारों का सृजन हो रहा है। इस वैकल्पिक रोजगारों के कारण सूखे व बाढ़ जैसी आपदाओं से निराश कामागारों व श्रमिकों का शहरो की ओर पलायन रुकेगा और गाँव सम्पन्न होंगे।

प्रतिवर्ष विदेशी पर्यटकों की बढ़ती संख्या श्अतुल्य भारतश की सफलता का सूचक है। गाँवों की परम्पराओं के अनुसार विभिन्न मेलों और उत्सवों का आयोजन भी लोगों को अपनी ओर आकर्षित करता है। ग्रामीण पर्यटन को बढ़ावा देने प्राचीन झीलों, पोखरों, तालाबों, झरनों, स्मारकों, हवेलियों, बावड़ियों, गुफाओं, किलों, मंदिरों मस्जिदो के संरक्षण पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। लेकिन इसके लिये ग्रामीण पर्यटन के विकास के नाम पर गाँवों की सादगी, संस्कृति, परम्पराओं रीति–रिवाजों व इनके मूल स्वरूप से छेड़छाड़ न की जाए यह हमें सुनिश्चित करना होगा। इसके साथ विदेशी आगन्तुओं के साथ होने वाले शोषण, अभद्र व्यवहार, ठगी व अन्य आपराधिक घटनाओं को रोकने के लिये सख्त कानून की आवश्यकता से इंकार नहीं किया

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

जा सकता है। हमें आतंकवाद एवं नक्सलवाद जैसी चुनौतियों का भी सामना करना होगा जिससे विदेशी पर्यटकों का विश्वास अर्जित किया जा सके और उन्हें एक भय और शोषण से मुक्त वातावरण प्रदान किया जा सके। इन सबके अभाव में ग्रामीण धरोहर एवं पारिस्थितिकी पर्यटन की कल्पना निरर्थक है।

अध्ययन क्षेत्रः

उमरिया जिला मध्यप्रदेश राज्य का नव सृजित जिला है। यह जिला वर्ष 2000 तक शहडोल जिले का भाग था। वर्ष 2000 में शहडोल जिले की तीन तहसीलों मानपुर, करकेली तथा पाली को विभक्त कर उमरिया जिले का गठन किया गया । यह जिला वर्तमान में शहडोल संभाग का एक जिला है। म.प्र. राज्य के दक्षिणी पूर्वी भाग में स्थित उमरिया जिला कोयले की भूमिगत खदानों एवं बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान के लिये ख्यातिलब्ध है। इस जिले की भौगोलिक स्थिति 23°12 उत्तरी अक्षांश से 24°2′ उत्तरी अक्षांश तक एवं 80°–3′ पूर्वी देशान्तर से 81°–30 पूर्वी देशान्तर के मध्य है। जिले का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 4076 वर्ग किमी. है। वर्ष 2011 में जिले की कुल जनसंख्या 643579 थी जिसमें से 329527 पुरूष एवं 314052 महिलाएँ थी। जिले का लिंगानुपात 953/1000 है जो 2001 में 946/1000 था। जिले का जनसंख्या घनत्व 158 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी. है जो राज्य के जनघनत्व 236 की तुलना में काफी कम है।

उमरिया जिले की सापेक्षिक स्थिति पूर्वी म.प्र. है। जिले के उत्तरी भाग में सतना एवं सीधी जिला स्थित है। उमरिया जिले के पूर्वी भाग में शहडोल जिला एवं पश्चिम में कटनी जिला स्थित है। इस जिले के दक्षिणी भाग में डिण्डोरी एवं जबलपुर जिला स्थित है। उमरिया जिले की पर्यटन की दृष्टि से स्थिति अनुकूल है। जिले में स्थित बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान वन्य जीवों का खजाना है। इस उद्यान का टाइगर शो पूरे देश में विख्यात है। जिले की मानपुर तहसील में बांधवगढ़ दुर्ग, शेष शैया विष्णु की प्रतिमा एवं असंख्य प्राकृतिक गुफायें पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र है। उमरिया जिले के आस–पास कई प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों का होना भी इसकी स्थित को चार–चाँद लगा रहा है। जिले के चारों ओर भेड़ाघाट, अमरकंटक, खजुराहो, रानी दुर्गावती अभ्यारण्य, संजय गाँधी राष्ट्रीय उद्यान, पन्ना राष्ट्रीय उद्यान, चित्रकूट, मैहर, रीवा का बाघेला म्यूजियम, रीवा की प्रपात रेखा एवं बाणसागर बाँध में नित–प्रतिदिन पर्यटकों का आना–जाना बना रहता है। उपरोक्त समीपी आकर्षणों के साथ–साथ जिले में ग्रामीण धरोहर एवं वन्य जीवों पर आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की अथाह संभावनायें है। इन संभावनाओं एवं उनके विकास में आने वाली समस्याओं का पता लगाना अध्ययन की विषय वस्तु या क्षेत्र।

पारिस्थितिकी पर्यटन का परिचय

समग्र रूप में पर्यटन देश का दूसरा सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा का स्रोत है। वर्ष 2007 में दिसम्बर तक 1 करोड़ 20 लाख की तुलना में अमरीकी डालर के रूप में सरकार को विदेश मुद्रा प्राप्त हुई जो वर्ष 2006 की तुलना में 4 प्रतिशत अधिक है।[3] पूरी दुनिया की तरह भारत सरकार को भी पर्यटन की अथाह अलौकिक क्षमता का एहसास हो गया है। अब भारत सरकार भी पर्यटन उद्योग को विकास की राह में मील का पत्थर मानने लगी है। आज भारत सहित अनके राष्ट्रों में पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा को काफी बल मिला है।[4]

पारिस्थितिकी पर्यटन (Eco&Tourism) से आशय पर्यावरण पर्यटन से है, इसके तहत पर्यटन का प्रबंधन तथा प्रकृति का संरक्षण इस तरीके से करना होता है कि एक तरफ पर्यटन व पारिस्थितिकी की आवश्यकताओं के बीच सन्तुलन बना रहे तो दूसरी तरफ स्थानीय समुदायों को रोजगार की जरूरतों की पूर्ति होती रहे।[5] दरअसल पारिस्थितिकी पर्यटन के जरिए ही अब पर्यटन उद्योग के महती आधार के रूप में प्राकृतिक विरासत को न केवल बचाया जा सकता है बल्कि दीर्घावधि जैव विविधता

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

संरक्षण उपायों और स्थानीय सामाजिक तथा आर्थिक विकास के बीच संबंध भी कायम रखा जा सकता है।[7] केन्द्र सरकार ने पर्यटन उद्योग एवं गैर सरकारी संगठनों आदि के परामर्श से देश में वर्ष 1998 में ही पारिस्थितिकी और पर्यटन नीति और दिशा निर्देश तय कर दिये थे।[6] इस नीति का उद्देश्य हमारे प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, सुरक्षा और इन्हें समृद्ध बनाना तथा पर्यावरणीय संरक्षण एवं समुदाय विकास के सकारात्मक प्रभावों के साथ पारिस्थितिकी पर्यटन की विनियमित वृद्धि सुनिश्चित करना रहा है। हाल के वर्ष में देश में निरन्तर बढ़ती जनसंख्या और स्थानीय निर्वाह के लिए प्राकृतिक स्थलों पर संसाधनों के निरन्तर घटते आधार से पहले से ही कमजोर पर्यावरण का निरन्तर ह्रास हो रहा है। विभिन्न प्रकार की आर्थिक क्रियाओं, खनन, कृषि, उद्योग आदि की वृद्धि के फलस्वरूप वनों का आकार तेजी से सिकुड़ता जा रहा है, इसी का परिणाम है कि प्रकृति का संतुलन भी निरन्तर गड़बड़ाता जा रहा है। इस संतुलन को बनाये रखने में पारिस्थितिकी पर्यटन[8] की अहम् भूमिका हो सकती है।

भारत दुनिया के उन सात जैव–विविधता सम्पन्न देशों में से एक है, जहाँ की प्राकृतिक व सांस्कृतिक विरासत अत्यधिक समृद्ध है। इस दृष्टि से प्रकृति और संरक्षण को ध्यान में रखने वाले पारिस्थितिकी पर्यटन को सभी स्तरों पर अपनाना जरूरी है। पारिस्थितिकी पर्यटन दरअसल पर्यटन उद्योग के पूर्ण एकीकरण को मान्यता प्रदान करता है ताकि यात्रा और पर्यटन लोगों की आय का स्रोत बने व स्थानीय लोग भी पृथ्वी की पारिस्थितिकी प्रणाली के संरक्षण, सुरक्षा और बहाली में योगदान करें। ऐसे पर्यटन के विकास से पर्यावरण संरक्षण पर्यटन का एक महत्वपूर्ण अंग बन जाता है। इसे इस रूप में समझें कि पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा का विकास करने से पर्यटकों को प्रेरणात्मक और भावनात्मक संतुष्टि प्राप्त होती है क्योंकि इसका लक्ष्य वन्य जीवों और पर्यावरण को लाभ पहुंचाना है। इस रूप में ऐसा पर्यटन प्रकृति व संस्कृति के संरक्षण के प्रति पर्यटकों को जागरुक करता है, जिसकी आज महती आवश्यकता है।

पारिस्थितिकी पर्यटन की प्रकृति

पारिस्थितिकी पर्यटन की अवधारणा आधुनिक विज्ञान की देन है। भारतीय मनीषियों ने इस अवधारणा का मूल्यांकन हजारों वर्ष पूर्व ही किया था। 'प्रकृति' और श्जीवश के अन्तर्सम्बन्धों को जन–जन तक बोध कराने के लिए विविध प्रतीकों के रूप में इन्हें धर्म, सामाजिक नियम और आचरण में समाहित कर दिया था। समुच्च रूप में इसे विहंग योग कहा गया जो प्रकृति और जीवों के अन्तर्सम्बन्धों की व्याख्या करता है। यही कारण है कि प्रकृति और मानव का मित्रवत संबंध हजारों वर्षों तक चलता रहा लेकिन आधुनिकता के आवेग में पुरानी परम्परा और आचरण को नकार दिया गया क्योंकि प्रकृति पर विजय की अभिलाषा में भौतिक सुख जीवन का आधार बन गया, इससे प्रकृति और जीव के संबंध बिगड़ने लगे और बाध्य होकर 'औद्योगिक मानव' को सोचना पड़ा कि ऐसा क्यों घटित हो रहा है।

आधुनिकीकरण एवं विज्ञान के बढ़ते प्रभाव, वैज्ञानिक उपलब्धियों और तकनीकी विकास जनित भौतिक सुख की दौड़ में यह अवधारणा बनने वाली कि मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त कर ली है। मानव अपनी इच्छानुसार आचरण एवं परिवर्तन करने लगा, जिसका दुष्परिणाम सुरसा के मुँह की भाँति फैलता नजर आने लगा। पारिस्थितिकी संकट से ग्रस्त मानव में पुनः प्रकृति की ओर चलो का नारा देते हुए श्औद्योगिक मानवश के साथ–साथ 'प्राकृतिक मानव' बनने को सोचने लगा।

पर्यावरणीय संकट की इस घड़ी में विकास की जो भी क्रियाएं संचालित थी उनमें से अधिकांश क्रियाएं पारिस्थितिकी संकट को जन्म दे रही थी। ऐसे स्थिति में कुछ ऐसी विकास क्रियाओं की ओर लोगो ने सोचा जिससे पर्यावरण नष्ट होने से बचे, उनमें एक नई विकास की क्रिया की पहचान की गई है, जिसे श्पारिस्थितिकी पर्यटन के नाम से जाना जाता है। पारिस्थितिकी के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि यह विज्ञान की वह शाखा है जिसमें एक ओर जीवों के जैविक एवं अजैविक पर्यावरण और दूसरी ओर जीवों के पारस्परिक क्रिया, पारस्परिक अर्न्तसंबंध तथा परस्पर अन्योन्याश्रित संबंधों का अध्ययन किया जाता है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

पारिस्थितिकी पर्यटन की संकल्पना

पारिस्थितिकी के अन्तर्गत जैव–जगत और उसके निकटवर्ती पर्यावरण के अर्न्तसम्बन्धों की व्याख्या जीवों पर वहाँ के निकटवर्ती पर्यावरण के प्रभावी कारकों के सन्दर्भ में अध्ययन किया जाता है। वास्तव में इकोलाजी शब्द का प्रयोग तो बहुत बाद में किया गया उसके पूर्व से ही पारिस्थितिकी अध्ययन या ज्ञान पर बल दिया जाता रहा है। इसका उल्लेख हमें हिप्पोक्रेटीज, अरस्तू तथा ग्रीक दार्शनिकों के लेख में मिलता है। ईसा पूर्व चौथी शताब्दी में अरस्तू के मित्र थीयोफ्रेस्ट्स जीवों एवं पर्यावरण के परस्पर सम्बन्धों का वर्णन संभवतः सर्वप्रथम किया था ।[9] इस दृष्टि से थीयोफ्रेस्ट्स को विश्व का प्रथम पारिस्थितिकी विज्ञान का पितामह माना जा सकता है।[10] 'इकोलाजी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम जर्मन जीव–वैज्ञानिक 'हैकेल' ने 1869 में किया था।[11]

Ecology शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द Oekologie से हुई है जो शब्द Oikos + Logos से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ आवास या गृह तथा अध्ययन होता है।[12] संयुक्त रूप से इसका आशय पृथ्वी रूपी गृह की उन समस्त सामग्री का अध्ययन करना है, जिसमें जीवों का उद्‌भव एवं विकास हुआ है, तथा उस वातावरण के प्रभाव की व्याख्या पारिस्थितिकी शास्त्र में की जाती है। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता टेलर[13] (1946) का मानना है कि 'पारिस्थितिकी विज्ञान समस्त जीवों का पर्यावरण के साथ समस्त सम्बन्धों के अध्ययन का विज्ञान है। संक्षेप में हम कह सकते है कि "जीवों का अपने पर्यावरण के प्रति अनुकूलन का अध्ययन पारिस्थितिकी है।"[14] इस तरह पारिस्थितिकी अध्ययन क्षेत्र के अन्तर्गत वनस्पति, प्राणी तथा मानव के स्वरूपों में किसी क्षेत्र में कार्यरत भौतिक बलों के प्रभावों को सम्मिलित किया जाता है। इसीलिए इसे तीन शाखाओं में विभक्त किया गया है। प्रथम शाखा पादप पारिस्थितिकी, द्वितीय शाखा प्राणी पारिस्थितिकी एवं तृतीय शाखा में मानव पारिस्थितिकी का अध्ययन किया जाता है।[15] मानव व पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन मानव पारिस्थितिकी में किया जाता है। मनुष्य जिस समाज, जिस परिवेश में जीता है, वही उसका पर्यावरण है। हवा, पानी, मिट्टी पेड़–पौधों से लेकर समस्त प्रकार के जीव–जन्तु, पशु–पक्षी, नदी, पहाड़, जलवायु, मौसम, खनिज के लिए इसमें स्थान है। इस दृष्टि से यह कह सकते हैं, कि मानव के चारों ओर जो कुछ भी है वह उसकी पारिस्थितिकी के तत्व या घटक है। इन घटकों को प्राकृतिक घटक या तत्व के नाम से जाना जाता है। ये सब प्राकृतिक पारिस्थितिकी के अंग है। प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ प्राणी 'मानव' को माना जाता है, क्योंकि मानव की–तमाम श्रेष्ठता के पीछे उसका बुद्धि बल है। मानव अपने बुद्धि बल का प्रयोग कर प्राकृतिक वातावरण में परिर्वतन या अनुकूलन कर एक नये वातावरण को सृजित करता है जिसे हम सांस्कृतिक पारिस्थितिकी के तत्व या घटक के नाम से जानते हैं। इसके अन्तर्गत मानवीय बस्तियाँ, आवास, परिवहन, पहनावा, खान–पान, खेत, खलिहान, बाग–बगीचे, उद्यान, धर्म, प्रथा, रीति–रिवाज, स्वास्थ्य, जड़ी–बूटी, देवता–पूजा, वृक्ष पूजा, नाच, गायन, वाद्य सब कुछ सम्मिलित है ।

पारिस्थितिकी के उपरोक्त सभी घटक किसी न किसी रूप में मानव को सुख, शान्ति, अवकाश बिताने, स्वस्थ रहने, मनोरंजन देने आदि में सहायक है। उपरोक्त समस्त क्रियायें पर्यटन से संबंधित है। इस दृष्टि से पारिस्थितिकी तंत्र एवं पर्यटन का संबंध स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है ।

पर्यटन का सामान्य अर्थ सुविधानुसार या अवकाश के क्षणों में दृश्य सौन्दर्य स्थल या रूपों का थोड़े समय के लिए भ्रमण करना है।[16] मानव स्वभाव से जिज्ञासु होता है, तथा अपनी इस जिज्ञासा की पूर्ति हेतु वह न केवल अपने दायरे या देश तक सीमित रहता है, बल्कि उसे बाहर देखने या परखने की लालसा बनी रहती है जो उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति है। इसी लालसा एवं स्वाभाविक प्रवृत्ति का प्रतिफल अर्थात क्रियात्मक रूप है 'पर्यटन'।[17]

आदिम जनजीवन पर आधारित

पारिस्थितिकी पर्यटन में पर्यटन और प्रकृति संरक्षण के प्रबंध को शामिल करते हैं। एक तरफ पर्यटन और पारिस्थितिकी की आवश्यकतायें पूरी की जायें और दूसरी ओर स्थानीय समुदाय के लोगों के रोजगार, नये कौशल आय और महिलाओं के लिए

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

बेहतर स्तर सुनिश्चित किया जाय। पारिस्थितिकी पर्यटन में अधिकतम आर्थिक पर्यावरणीय और सामाजिक लाभ भी प्राप्त किये जाते हैं। पारिस्थितिकी पर्यटन को यदि आर्थिक रूप से देखा जाये तो समें भारी मात्रा में राजस्व भी मिलता है, और पारिस्थितिकी प्रणाली को कोई नुकसान पहुचाये बिना वन संसाधनों का दोहन भी किया जा सकता है। पारिस्थितिकी पर्यटन के अन्तर्गत अपेक्षाकृत अबाधित प्राकृतिक क्षेत्रों की ऐसी यात्रा शामिल है जिसमें निर्दिष्ट लक्ष्य प्रकृति का अध्ययन और समादर करना तथा वनस्पति और जीव जन्तुओं के दर्शन का लाभ उठाना और साथ ही इन क्षेत्रों से संबद्ध सांस्कृतिक पहलुओं का अध्ययन शामिल है। पर्यटन एवं पारिस्थितिकी एवं पर्यटन का घनिष्ठ संबंध है रोमांचकारी परिदृश्य, प्राकृतिक सौन्दर्य और सुरम्य स्थलों जैसे सुन्दर समुद्र तट, झिलमिलाती झीलें व झरने, ऊँचे पर्वत की चोटियाँ आदि अनन्त काल से प्रकृति प्रेमी पर्यटकों के आकर्षण के केन्द्र रहे है। मध्यप्रदेश स्थित उमरिया जिला वन्य जीव विविधता से परिपूर्ण है। यहाँ की जलवायु वनस्पतियाँ, जीव–जन्तु, पहाड़, नदी–नाले, सुरम्य प्रपात आदि उपलब्ध हैं, इसलिए इसे पर्यटकों के लिए स्वर्ग कहा जाता है। यहाँ ट्रैकिंग के लिए ऊँची पहाड़ियाँ नौकायन के लिए विशाल नदियाँ, जीव जन्तुओं का अवलोकन करने के लिए उद्यान हैं, आकर्षक प्रपात एवं सुरम्य झरनों सहित अनेक मंदिर, उत्कृष्ट शिक्षा और कलात्मकता से पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है। यहाँ स्मारकों, पुरानी इमारतों के अवशेष, प्राचीन नगर, किले, मकबरे, राजमहल आदि भी पर्यटकों में रोमांच पैदा करते हैं। यदि हमें पारिस्थितिकी पर्यटन को बढ़ाना है और पर्यटकों को आकर्षित करना है तो हमें जिले की पारिस्थितिकी को सन्तुलित बनाना होगा।

पर्यटन के आज विभिन्न रूप देखने को मिल रहे है किन्तु उन तमाम रूपों में सर्वाधिक महत्व पारिस्थितिकी पर्यटन (Eco&Tourism) को दिया जा रहा है। उसका मूल कारण आज दुनिया के तमाम विकसित एवं विकासशील देश पारिस्थितिकी संकट की समस्या से जूझ रहे है। ऐसे समय में संविकास की अवधारणा (Concept of Sustainabule Development) पर आधारित पारिस्थितिकी पर्यटन का विकास एक प्रकाश की किरण के रूप में दिखाई दे रहा है। यही कारण है कि आज दुनिया के वे देश जो पर्यटन में अग्रणी हैं उन देशों में पारिस्थितिकी पर्यटन, आयुर्वेद पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, उद्यान पर्यटन, वन्य जीव पर्यटन आदि को बढ़ावा दिया जा रहा है। उमरिया जिले में भी पर्यटन विकासशील अवस्था में है और यहाँ पारिस्थितिकी पर्यटन विकास की अपार संभावनायें है। अतः इस दिशा में योजनाकारों, बुद्धिजीवियों, पर्यावरण प्रेमियों, पर्यटन सलाहकारों को सोचने को बाध्य किया है।

ग्रामीणः

ग्रामीण धरोहर पर्यटन की इस नवीन अवधारणा से अभिप्राय यह है कि पर्यटक या सैलानी शहरों की भव्य इमारतों, ऐतिहासिक स्मारकों, समुद्र तटों, पर्वतीय स्थलों और मनोरम वन प्रदेशों के साथ–साथ देश के ग्रामीण अंचलों की प्राकृतिक छटा और जनजीवन का अनुभव और आनन्द प्राप्त कर सकें। हमारा देश गाँवों का देश माना जाता है, जहाँ शिल्प, संस्कृति और कला का ऐसा अदभुत खजाना बिखरा में पड़ा है, जो पर्यटकों को आकर्षित करने में सक्षम है। हमारे गाँव शहरों की तुलना पिछड़े है। गाँव शिक्षा, स्वास्थ्य, परिवहन, संचार और उद्योगों की दृष्टि से पिछड़े हैं। परिणामस्वरूप जनसंख्या का पलायन नगरों की ओर हो रहा है, नगरों का पर्यावरण लगातार प्रदूषित हो रहा है। ग्रामीण पर्यटन ग्रामीण विकास की कोई विशाल योजना का अंग नहीं है किन्तु परोक्ष रूप से गाँवों के उत्थान और नगरीकरण की इस प्रवृत्ति में लगाम लगा सकता है, ग्रामीण लोगो के शहरी पलायन पर रोक लगाने का साधन बन सकता है। इस क्रिया–कलाप द्वारा जहाँ गांवों में आधारभूत बुनियादी सुविधाओं का विकास होगा, स्थानीय लोगों को रोजगार मिलेगा, गाँवों की सुख समृद्धि में वृद्धि होगी वहीं पर्यावरण भी संरक्षित होगा। ग्रामीण धरोहर पर्यटन की गाड़ी आगे बढ़ने से गाँवों के असंख्य कलाकारों, शिल्पकारों को अपने कौशल की अभिव्यक्ति के अवसर मिलेंगे साथ ही उसका मूल्य भी उन्हें मिलेगा। गाँवों में पड़े पुराने दुर्ग, भवन, बावड़ियाँ, महल, झीलों, हवेलियों, वनों, उद्यानों को पर्यटन से

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 2, February 2023
Impact Factor: 7.301

जोड़कर जहाँ ग्रामीण सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण होगा वहीं इन्हें होटल या मोटल का रूप देकर गाँवों के लोगों को रोजगार के साथ–साथ उनके स्वाभिमान और आत्मगौरव को भी बढ़ाने में मदद मिलेगी।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि पर्यटन एवं पारिथितिकी योजना के स्तर पर ग्रामीण धरोहर पर्यटन का सपना जितना सुखद और सरल लगता है कार्यान्वयन के स्तर पर उतना ही चुनौतीपूर्ण तथा कठिन है। इनके विकास के लिये तीन स्तरों पर प्रयास अपेक्षित है। प्रथम स्तर पर गाँवों में बुनियादी सुविधाओं का विकास, द्वितीय स्तर पर गाँवों की प्राकृतिक व सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण एवं तृतीय स्तर पर ग्रामीण पर्यटन के विकास की गतिविधियों के संचालन में समुचित तालमेल और संतुलन को स्थापित करने का मुख्य प्रयास है पर्यटन के कारण स्थानीय लोगों को रोजगार प्राप्त करने में मदद मिली है जिससे उनका आर्थिक जीवन–सतर में सुधार हुआ है। अतएव ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यटन को बढ़ावा देने की विशेष आवश्यकता है। जिससे स्थानीय लोगों को रोजगार आसानी से उपलब्ध हो सके।

संदर्भ

[1]. सिंह बी.पी. एवं सिंह सुमन्त (2000) मध्यप्रदेश में पर्यटन, आदित्य प्रकाशन बीना, पेज–2
[2]. पटेल, डॉ. सुधीश कुमार, पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष, 54 अंक–7 मई 2008 पृष्ठ 12
[3]. पाण्डे, गिरीश चन्दा, अतुल्य भारत में ग्रामीण पर्यटन, कुरूक्षेत्र, वर्ष, 54, अंकदृ7 मई 2008 पृष्ठ 1
[4]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा पेज–2
[5]. पटेल, डॉ. सुधीश कुमार, पर्यटन उद्योग का बदलता चेहरा, कुरूक्षेत्र, वर्ष 54, अंक–7 मई 2008 पृष्ठ–12
[6]. कोरी, राजबहादुर (2006)बघेलखंड में पारिस्थितिकी पर्यटन, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध, अवधेशप्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा।
[7]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा–4
[8]. सिंह सतेन्द्र, पन्ना जिले में पारिस्थितिकी पर्यटन की समस्यायें एवं संभावनाएँ, अप्रकाशित पी.एच.डी. शोध प्रबंध अ.प्र. सिंह विश्वविद्यालय रीवा पेज–5
[9]. अवस्थी एन.एम. एवं तिवारी, आर.पी. (1995) पर्यावरण भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–161
[10]. अवस्थी एन. एम. एवं तिवारी, आर.पी. (1995) पर्यावरण भूगोल, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल, पृष्ठ–161
[11]. सिंह, नारायण (1993) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के मूलतत्व तारा बुक एजेंसी वाराणसी पृष्ठदृ31 12 सिंह, नारायण (1993) पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी के मूलतत्व तारा बुक एजेंसी वाराणसी पृष्ठ–31
[12]. Toylor E.B. (1946) Anthropolgy, Volume Ist and IInd, Thin Kers Library, Watts and Co-London.
[13]. कोचर, पी.एल. (1983) पादप पारिस्थितिकी, रतन प्रकाशन, मंदिर इन्दौर
[14]. Bharadwaj, S.M. (1973) Hindu places of Pilgrimage in India, Thompson Press Ltd. Delhi.
[15]. Dattar, B.N- (1981) Himalayan Pilgrimages, Publication Division New Delhi.
[16]. Kaur, J. (1979) Bibiographical sources for Himalayan pilgrimages and Tourism studies in uttarakhand, Tourism recreation research Journal, Lucknow, vol. IV No. 01

Vol-17, January-June 2023

ISSN No : 2278-0408

IIFS IMPACT FACTOR 5.375

World Translation

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editor in Chief
Prof. Ashok Singh

Dr. Surendra Pandey
(Editor)

Dr. Vikash Kumar
(Editor)

Vol. 17 January – June. 2023 ISSN: 2278-0408 Impact Factor: 5.375

Chief Editor

Prof. Ashok Singh
Vice Chancellor, Sant Gahira Guru Vishwavidyalaya, Sarguja, Ambikapur, Chhattisgarh

Editor

Dr Surendra Pandey
Assistant Professor, Department of Hindi, Kooba P.G. College, Dariapur, Newada, Azamgarh

Dr Vikash Kumar
Assistant Professor, Department of Hindi, Shri Varshney College, Aligarh, U.P

Deputy Editor

Dr Ratnesh Kumar Tripathi
Assistant Professor, Department of History, Satyawati College, University of Delhi

Dr Santosh Bahadur Singh
Assistant Professor, Department of English Lady Irwin College, University of Delhi

Dr Ritu Varshney
Assistant Professor, Department of Hindi, Kirori Mal College, University of Delhi

Executive Editor

Dr Varsha Singh
Associate Professor
Department of English
Deshbandhu Collge, University of Delhi

Dr Seema Singh
Assistant Professor, Department of Hindi,
College of Vocational Studies,
University of Delhi

Dr Lal Singh
Assistant Professor, Department of Law,
Shri Varshney College, Aligarh

Sub Editor

Dr Rakesh Kumar
Assistant Professor,
Department of Physical Education,
Shri Varshney College, Aligarh

Dr. Umesh Kumar Rai
Assistant Professor, Department of Hindi
Veer Kunwar Singh University, Arrah, Bihar

Managing Editor

Dr Vinay Kumar Shukla
Associate Professor,
Govt. Ramanuj Pratap Singdev P.G. College
Koriya, Chattisgarh

Dr Arun Kumar Mishra
Assistant Professor, Department of Hindi,
M.D.P.G. College, Pratapgarh

Legal Advisor

Dr. Mukesh Kumar Malviya
Assistant Professor, Department of Law,
Kashi Hindu Vishwavidyalaya, Varanasi

Vol. 17 January – June. 2023 ISSN: 2278-0408 Impact Factor: 5.375

WORLD TRANSLATION

....An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Editorial Board

1. Prof. Anita Singh, Department of English, Banaras Hindu University, Varanasi.
2. Prof. Surendra Pratap, Department of Hindi, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith, Varanasi.
3. Prof. Vasisth Anoop, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi.
4. Prof. Champa Singh, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi.
5. Prof. Gajendra Pathak, Department of Hindi, Hyderabad University, Hyderabad.
6. Prof. Mritunjay Singh, Shanti Prasad Jain College, Bihar.
7. Prof. S.R. Jaishree, Kerala University, Kerala.
8. Prof. Sunita Singh, Faculty of Education, Le Moyne College, South New York, US.
9. Prof. Manoj Singh, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi.
10. Prof. Vinod Kumar Mishra, Department of Hindi, Central University, Tripura.
11. Prof. Satish Chandra Dubey, Department of Philosophy, Banaras Hindu University, Varanasi.
12. Prof. Umapati Dixit, Kendriye Hindi Sansthan, Agra.
13. Prof Prabhakar Singh, Department of Hindi, Banaras Hindu University, Varanasi.
14. Prof. Savitri Singh, Department of Sanskrit, Rohtas Mahila Mahavidyalaya, Sasaram, Bihar.
15. Prof. Devendra Pratap Singh, Kooba P.G. College, Dariapur, Nevada, Azamgarh.
16. Prof. Abhimanyu Yadav, Principal, Kooba P.G. College, Dariapur, Nevada, Azamgarh.
17. Dr Vikash Kumar Singh, Assistant Professor, AIHC & Archeology Department, Banaras Hindu University, Varanasi.
18. Dr Jitendra Kumar Singh, Associate Professor, Department of Hindi, Central University of Rajasthan, Rajasthan.

Vol. 17 January – June. 2023 ISSN: 2278-0408 Impact Factor: 5.375

विषय-सूची
Contents

PART–I

1. उद्यमिता व उसकी आर्थिक विकास में भूमिका 3
—डॉ० पवन कुमार गुप्ता

2. क्रांतिकारी कर्तार सिंह सराभा : देशभक्ति पूर्ण कविताएँ 7
—डॉ० अरुण कुमार मिश्र

3. बच्चन सिंह की कथालोचना 14
*—*निशा सिंह, **डॉ० प्रतिमा सिंह*

4. कमलेश्वर के उपन्यासों में यथार्थ बोध 28
—प्रियंका सहाय

5. प्रगतिवादी-प्रयोगवादी गीत 37
—डॉ. आकाश वर्मा

6. प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना: एक विश्लेषणात्मक समीक्षा 44
*—*डॉ. हेमलता सांगुड़ी, **शेर बहादुर*

7. दीनदयाल गिरि एवं गिरधर कविराय की लोकप्रियता के कारण 51
—डॉ० भारतेन्दु कुमार पाठक

8. सैदपुर तहसील (जनपद गाजीपुर) में कृषि जनसंख्या घनत्व का विश्लेषण 54
—कमिन्दर

9. हिंदी कहानी और आदिवासी स्त्रियों की कथा-व्यथा 61
—बृजेश कुमार

10. हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना 69
—डॉ० विकास कुमार

11. भारतीय लोकतंत्र एवं रागदरबारी 75
—डॉ. विनय कुमार शुक्ला

Vol. 17 January – June. 2023 ISSN: 2278-0408 Impact Factor: 5.375

भारतीय लोकतंत्र एवं रागदरबारी

डॉ. विनय कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक
शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव
स्नाकोत्तर महाविद्यालय, बैकुण्ठपुर
कोरिया (छत्तीसगढ़)

सारांश

वर्तमान भारतीय साहित्यिक में 'रागदरबारी' जैसा उपन्यास किसी परिचय का मोहताज नहीं। 'रागदरबारी' के कथा-विन्यास में भारतीय समाज अपनी पूरी रंगत के साथ विद्यमान है। यहाँ एक ऐसा गाँव केन्द्र में है जो शहर से कुछ दूरी पर होने के बावजूद अपने समस्त गँजहेपन के साथ थिरक रहा है। जहाँ आजादी के बाद होने व पनपने वाली समस्त राजनैतिक और सामाजिक विद्रूपताएँ, बेलौस अंदाज, पारिवारिक संबंधों में आ रही दरार, व्यभिचार, कुविचार आदि पैबस्त है। यह उपन्यास अपनी कहन शैली के पैनेपन के चलते पाठकों का ध्यान आकर्षित करता है। साथ ही अपने साथ भारतीय गाँव के महासागर की यात्रा के लिए आमंत्रण देता है। यह उपन्यास गाँव की जिंदगी का वह दस्तावेज है जिसे अभी भी पढ़ा जाना बाकी है। जो हर बार एक नवीन पठनीयता की माँग करता है, इस माने में यह क्लॉसिक का दर्जा हासिल कर चुका है। बहरहाल, इस उपन्यास के केन्द्र में शिवपालगंज नामक गाँव है, जहाँ स्वतंत्रता बाद की विकास योजनाओं की धमक साफ-साफ देखी व सुनी जा सकती है।

बकौल हरीश नवल, साम्यवाद, गाँव-शहर का रिश्ता, जनता जनार्दन, नेतागिरी, सहकारिता, मैथेमेटिक्स, माला, हिन्दुस्तानी नियत, सिंबालिक मॉडर्नाईजेशन, धर्म की लड़ाई, वास्तविक दृश्य, डार्विन सिद्धांत, यूनियनवाजी, विरोधी से व्यवहार, सिनेमा का असर, वीर्य का महत्व, नशीले पदार्थ, गुप्त साहित्य, पीढ़ी-संघर्ष, विदेशी-प्रभाव, खेती पर लेक्चर, विज्ञापनवाजी, अंग्रेजी का जादू, सरकारी अनुदान, प्यार की फिलॉसफी, गुटबंदी, वेदांत-समीक्षा, इंसानियत का अर्थ, गाँधीगीरी का सच, गाँव-चुनाव की राजनीति, पद की मर्यादा के असली मायने और भी न जाने क्या-क्या समाजशास्त्रीय सूत्र व्याख्याएँ श्रीलालजी ने की हैं, जिनका हिंदी साहित्य में कोई सानी नहीं है।[1] ग्राम केन्द्रित उपन्यासों की परंपरा

में 'राग दरबारी' भारतीय ग्राम्य जीवन को रेखांकित करने वाला ऐतिहासिक पड़ाव है, जहाँ उत्तरोत्तर आ रही विकृति को देखा व महसूस किया जा सकता है। यहाँ शिवपालगंज में आजादी के इक्कीस वर्षों बाद भी लोकतांत्रिक व्यवस्था के चिन्ह देखने को मिलते हैं पर हैं वे नाममात्र के ही, क्योंकि वे जनता के लिए कम, शासन से मिले अपने अधिकारों के द्वारा उनके शोषण के लिए अधिक सक्रिय हैं। शिवपालगंज में ग्राम-सभा, ग्राम-पंचायत, कोऑपरेटिव यूनियन इंटर कॉलेज आदि बहुत कुछ है पर गाँवों की वास्तविकता इन कायांतरणों के बावजूद मूलरूप से वहीं है जो 'गोदान' और 'मैला आँचल' के जमाने में थी। इस अर्थ में गाँव नहीं बदले हैं, उनका विकास नहीं हुआ है। उनकी जिंदगी मध्यकालीन की मध्यकालीन ही है। यद्यपि उसमें आधुनिकता का रंगरोगन और तड़का खूब लगाया गया है। तौर-तरीके बदल गए हैं पर दृष्टि वहीं की वहीं, बल्कि कहा जा सकता है कि और भी घातक हो गई है। भूमि समस्या, जातिगत-वैमनस्य, स्वार्थपरता और भाई-भतीजावाद, शोषण, कट्टर-संकीर्ण और रूढ़िग्रस्त जीवन-दृष्टि, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, मूल्यहीनता, अकर्मण्यता की समस्याएँ पहले से कुछ अधिक परिलक्षित होती है।[2] जहाँ धोखेबाजी, मक्कारी, अनैनिक संबंध जिसकी लाठी उसकी भैंस, धांधली, गाँव के दिन-पर-दिन पतन की ओर अग्रसर होने की गाथा कहते हैं।

इस उपन्यास के कथा केन्द्र में 'शिवपालगंज' है, जो न गाँव है न कोई कस्बा। यह गाँव और कस्बे के बीच स्फर करता गाँव है 'शिवपालगंज' का केन्द्र और घनीभूत होते हुए वाया कॉलेज वैद्य जी की बैठक में पैबस्त है। श्रीलालजी के अनुसार ईंट-गारा ढोनेवाले मजदूर भी जानता था कि बैठक का मतलब ईंट और गारे की बनी हुई ईमारत भर नहीं है। नं. 10 डाउनिंग स्ट्रीट, व्हाइट हाउस, क्रेमलिन आदि मकानों के के नहीं, ताकतों के नाम है।[3] यह दरबारे-आम समूचे गाँव में होने वाली हलचलों का केन्द्र है, जहाँ गँवई समाज की कलक-गाथा का नया महाराग दिखाई पड़ता है। वैद्य जी की इस बैठक में उनके वरदहस्त तले कॉलेज में गुटबंदी, राजनीति तथा कोऑपरेटिव यूनियन में गबन होता है। ग्राम-प्रधान भी इनका दरबारी है और इस दरबार में गीता, गाँधीवाद, धर्मयुद्ध, प्रेम,, अहिंसा, प्रजातंत्र, वीर्य रक्षा से संबंधित भाषण देकर आशा का संचार किया जाता है।[4] 'रागदरबारी' में वैद्यजी थे हैं और रहेंगे। अंग्रेजों के जमाने में वे अंग्रेजों के लिए श्रद्धा दिखते थे। देसी हुकूमत के दिनों में वे देसी हाकिमों के लिए श्रद्धा दिखाने लगे। वे देश के पुराने सेवक थे। अब वे कोऑपरेटिव यूनियन के मैनेजिंग डायरेक्टर और कॉलेज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर काम नहीं करना चाहते थे क्योंकि उन्हें पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के इन कामों को निभाने वाला कोई आदमी ही न था और वहाँ जितने भी नवयुवक थे, वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे, इसीलिए उन्हें बुढ़ापे में इन पदों को संभालना पड़ा था।[5]

वैद्यजी शिवपालगंज के मुख्य कर्ता-धर्ता हैं। इस शिवपालगंज में एक कॉलेज है, छंगामल इंटर कॉलेज। रिश्वत, अंग्रेजी विज्ञापन, पुलिस की निष्क्रियता, आपराधिक प्रवृत्तियाँ, न्यायिक अव्यवस्था

आदि इस गाँव में किसी न किसी रूप में जुड़े हैं, जिनके प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सूत्रधार हैं वैद्यजी। इन वैद्य जी की गंवई राजनीति वेदान्त के आधुनिक भाष्य पर आधारित है जो उनकी खुद की जवाबदेही इस प्रकार तय करती है- "वेदान्त के अनुसार जिसका हवाला वैद्यजी आयुर्वेद के पर्याय के रूप में दिया करते थे- गुटबंदी परात्मानुभूति की चरम दशा का एक नाम है। उसमें प्रत्येक 'तू' 'मैं' को और प्रत्येक 'मैं' 'तू' को अपने से ज्यादा अच्छी स्थिति में देखता है। वह उस स्थिति को पकड़ना चाहता है। 'मैं' 'तू' को और 'तू' 'मैं' को मिटाकर 'मैं' की जगह 'तू' और 'तू' की जगह 'मैं' बन जाना चाहता है।[6] गाँवों में व्याप्त गुटबन्दी के चरम नमूने हैं वैद्यजी। जहाँ खुद की सत्ता कायम रखने के लिए जैसे भी हो विरोधी को चित्त करना परम आनंद की अनुभूति है। गाँव में पालक-बालकों की महत्ता और दबंगई का महात्म्य आज चरम पर है। उपन्यास में जहाँ रूप्पन बाबू को शिवपालगंज व्यक्तिगत कारणों से कूड़ा, नाबदान, नाली नजर आता है वहीं रंगनाथ को महाभारत की तरह सब कुछ को अपने में समेटने वाला नजर आता है। यानी जो यहाँ हैं वह सब जगह है और जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं है।

रागदरबारी में गाँव का आधार बनाकर स्वातंत्रयोत्तर भारतीय लोकतंत्र में व्यवस्था की सड़ांध, जनतांत्रिक मूल्यों का विघटन तथा नैतिक और समाजिक अध:पतन का सर्वनकारवादी विमर्श रचा गया है।[7] ग्रामीण जीवन की सभ्यता की परत-दर-परत उधेड़ने के क्रम में वह गाँव हमारे सामने रूबरू होता है जो लुट-पिट रहा है। पुलिस-व्यवस्था, न्याय प्रणाली, स्वास्थ्य व्यवस्था, विकास योजनाएं, नैतिक मूल्य, शिक्षा-प्रणाली, जाति व्यवस्था, राजनीति, भाईचारा, पत्रकारिता, सदभाव आदि सबके सब पतन की ओर अग्रसर हैं। यह हाल तब का है जब आजादी मिले जमा-जुमी बीस बरस ही हुए है। इतनी सीमित कालावधि में 'गोदान' और 'मैला आंचल' के गाँव को कोसो दूर झटकते हुए 'रागदरबारी' ग्रामीण समाज का नया आख्यान प्रस्तुत करता है। जहाँ जनता को जनता बनाए रखने हेतु तमाम दाँव-पेंच चलते रहते हैं। आजादी के बाद आम जन-मन में जो आशाएं-आकांक्षाएं थीं उनका विपर्यय हुआ। समाज में जो वर्चस्वशाली वर्ग था वह स्वतंत्र भारत में खुद का नया मुकाम बनाने के लिए जोड़-तोड़ में लग गया। फिर उन्हीं का आधिपत्य कायम हुआ। अपनी ताकत बनाये रखने के लिए यथास्थिति की तमाम नारों के बावजूद बचाये रखने की कोशिश बढ़ती ही गई। कभी-कभी लगता है कि 'रागदरबारी' में चित्रित समाज गँजहापन को मीलों पीछे छोड़ चुका है। पर आज भी हम गाँवों के पतन के जितने भी संस्थान, गढ़, क्रियाएं हैं उसके मूल तत्व 'रागदरबारी' में देख सकते हैं। गाँव बदले हैं जरूर, रहन-सहन में बदलाव आया है पर आपसी सद्भाव गन्दी राजनीति व स्वार्थ की भेंट चढ़ चुका है। वैद्यजी, सनीचर, बद्री पहलवान, छोटे पहलवान व जोगनाथ जैसे पात्रों की बाढ़ ऊपर से नीचे तक अपनी पूरी ताकत के साथ मौजूद है। तेजपाल चौधरी के अनुसार 'रागदरबारी' के लेखन का समय वह है जब राजनीति नीति का दामन छोड़कर सत्त की ओर मुड़ रही थी। अधिकतर नेता आजादी की लड़ाई में किए गए त्याग की कीमत ब्याज सहित वसूलने में लगे थे। सत्ता की इस दौड़ में ऐसे लोग भी शामिल हो गये

थे, जिन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ राष्ट्रीय संघर्ष में खलनायक की भूमिका निभाई थी।[8] इस परिवर्तन ने ग्रामीण राजनीति को भी गहराई तक प्रभावित किया। चूंकि गाँव ही इन नेताओं के असली वोट बैंक थे, अत: इनकी सूझबूझ से वहाँ छुटभैया नेताओं का एक ऐसा वर्ग उभरा जो अपने-अपने क्षेत्र के बेताज बादशाह थे। जिनके संरक्षण में गुंडागर्दी पनपती थी और जो पंचायतों पर कब्जा करके, सहकारी समितियों को हथियाकर, स्कूलों, कॉलेजों की मैनेजिंग कमेटियों पर अधिकार जमाकर अपना उल्लू सीधा करने में विश्वास रखते थे। 'रागदरबारी' ऐसी राजनीति का प्रामाणिक दस्तावेज है। इस प्रकार की राजनीति ने भारतीय गाँवों की सदियों-सदियों से चली आ रही सहकारिता व एक सूत्रता को खंडित कर दिया। स्वार्थ और फरेब की गँजहा प्रवृत्ति हजार-हजार बाहों वाली विषकन्या के रूप में ग्रामीण समाज को किस प्रकार विभिन्न कोणों से अपने आलिंगन पाश में जकड़ रही, 'रागदरबारी' इसका दस्तावेज है।

संदर्भ सूची

1. प्रेम जनमेजय (सं.) : श्रीलाल शुक्ल : विचार विश्लेषण एवं जीवन, पृ. 50
2. वही, पृ. 69
3. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी, पृ. 29
4. डॉ. चन्द्रप्रकाश मिश्र : श्रीलाल शुक्ल और रागदरबारी, पृ. 105
5. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी : पृ. 32
6. श्रीलाल शुक्ल : राग दरबारी : पृ. 78
7. प्रेम जनमेजय (सं.) : श्रीलाल शुक्ल : विचार विश्लेषण एवं जीवन, पृ. 62
8. वही, पृ. 71

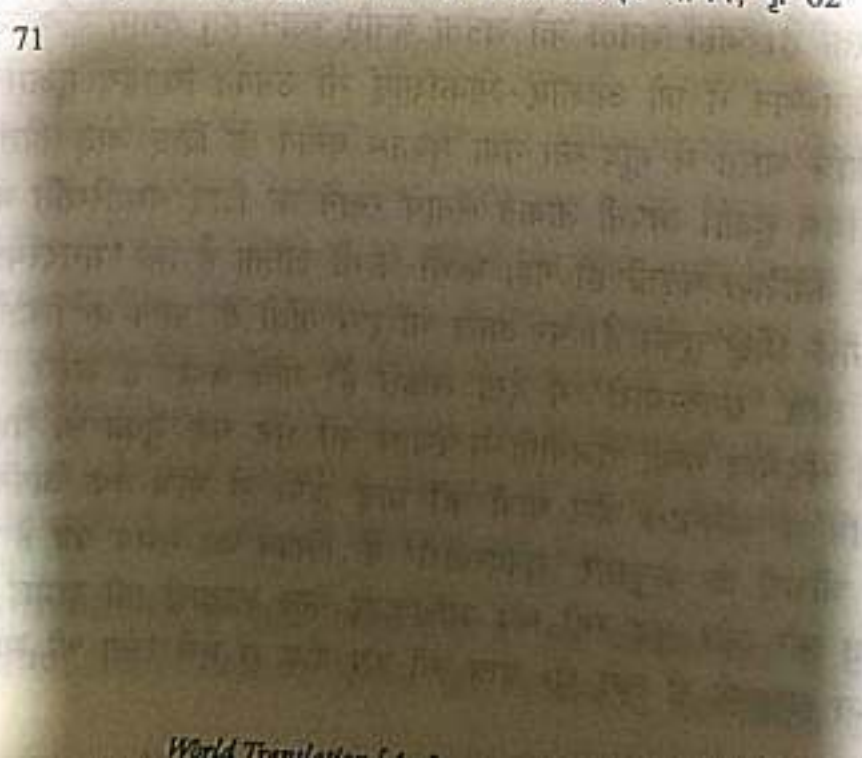

Vol-17, January-June 2023

ISSN : 2319-7137

IIFS IMPACT FACTOR 5.125

INTERNATIONAL Literary Quest

An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal

Prof. Ashok Singh
(Editor in Chief)

Dr. Vikash Kumar
(Editor)

Dr. Surendra Pandey
(Editor)

Vol. 17 January – June 2023 ISSN: 2319-7137 Impact Factor: 5.125

INTERNATIONAL LITERARY QUEST

[An International Multidisciplinary Peer Reviewed Refereed Research Journal]

Chief Editor
Prof. Ashok Singh
Editors
Dr. Vikash Kumar
Dr. Surendra Pandey

Published by
Ygantar Prakashan
D-750, Gali No. 04, Ashok Nagar
Shadara New Delhi 110093

Printed by
Akhand Publishing House, Delhi (India)
L-9/A, First Floor, Street No.42, Sadatpur Extension, Delhi
Mob. 9968628081, 9555149955, 9013387535 Email: akhandpublishing@yahoo.com

Note: The responsibility of the facts given and opinions expressed in articles of journal is solely that of individual author and not to the publisher.

Email:internationalliteraryquest@gmail.com,Website:https://internationalliteraryquest.com/

12. आज का मीडिया और हिन्दी साहित्य 94
—*संगीता कुमारी*

13. वर्तमान परिदृश्य और आत्महत्या के विरूद्ध 102
—*डॉ. विनय कुमार शुक्ला*

14. सारनाथ सिंहशीर्ष स्तम्भ (मौर्यकालीन कलाकृति के सन्दर्भ में) 109
—*कोमल*

15. पूर्व मध्यकाल में शूद्रों की स्थिति और वैश्यों और शूद्रों की सापेक्ष की स्थिति में परिवर्तन 114
—*मितराम वर्मा*

16. श्रीमद्भगवदगीता में प्रतिपादि स्वधर्म का वर्तमान में प्रासंगिकता 121
—*अंजलि उपाध्याय*

17. भूमण्डलीकरण के दौर में बिहार की सामाजिक संरचना : एक अवलोकन 126
—*डॉ० रॉली कुमारी*

18. रघुवीर सहाय की रचनाओं में लोकतंत्र 131
—*डॉ० सुरेन्द्र पाण्डेय*

19. माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का उनके समायोजन क्षमता के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन 142
—**डॉ० देवेन्द्र यादव, **संदीप कुमार यादव*

20. क्षेत्र के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन 152
—**अखिलेश कुमार यादव, **डॉ० अरविन्द कुमार मौर्य*

21. सूफीमत में अन्य धर्मों की सादृश्यता का दर्शन 162
—*राजकुमार*

22. युवा संस्कृति के बदलते प्रतिमान 168
—*रितेश वर्मा*

23. भीष्म साहनी की कहानी कला: संदर्भ और प्रकृति (विशेष संदर्भ: चीफ की दावत और वांगचू) 176
—*डॉ. शेफालिका शेखर*

वर्तमान परिदृश्य और आत्महत्या के विरूद्ध

डॉ. विनय कुमार शुक्ला
सहायक प्राध्यापक
शासकीय रामानुज प्रताप सिंहदेव
स्नाकोत्तर महाविद्यालय, बैकुण्ठपुर
कोरिया (छत्तीसगढ़)

वर्तमान साहित्यिक घटाटोप और सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों के मझधार में प्रेमचन्द का यह कथन बरबस ध्यान आकर्षित करता है कि हमारी कसौटी पर वही साहित्य खरा उतरेगा जिसमें उच्च चिंतन हो, सौंदर्य का सार हो, सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाइयों का का प्रकाश हो जो इसमें गति और बेचैनी पैदा करे, सुलाए नहीं क्योंकि अब और ज्यादा सोना मृत्यु का लक्षण है। साहित्य और उसमें भी कविता चलताऊ रपट कर्म नहीं जिसे जब चाहे लिख बोल के जी हल्का कर लिया। वह बाह्य और अंतरतम का सुन्दर प्रकटीकरण है। यह दौर खबरों की भीषणतम् आवाजाही का दौर है। जहां सिर्फ और सिर्फ खबर है और उसके भीतर की चीख दब सी गई है या यों कहें कि जानबूझकर दबा दी गई है। हमें यूं लगता है कि हम आस-पास होने वाली घटनाओं से वाकिफ हैं पर उस घटना के घटित होने की जो प्रक्रिया है उससे हम बेखबर हैं। इस संदर्भ में रघुबीर सहाय की कविताएं एक आम मतदाता की हालत का मुकम्मल बयान पेश करती हैं। समय बीतने के साथ रघुबीर सहाय की कविताओं की प्रासंगिकता बढ़ती ही जा रही है। आज जब वर्तमान समाज व्यवस्था के बीच आम लोगों का मानवीय गरिमा के साथ जीना लगभग असंभव हो गया है इस स्थिति में रघुबीर सहाय की कविताएं पहले इस जीवन-विरोधी स्थिति की पहचान कराती हैं, फिर उससे मठभेड़ के लिए हमें शक्ति देती हैं। भारतीय लोकतंत्र की महान परिकल्पना जिस मतदान आधारित तंत्र व्यवस्था के आधार पर कायम हुई वहां मतदाता भ्रष्टाचार और अभिव्यक्ति न कर पाने की घुटन के बीच इस कदर चाँप कर रख दिया गया है जहां स्वाधीनता शब्द बेमानी है-

बाँध में दरार
पाखण्ड वक्तव्य में
घटतौल न्याय में
मिलावट दवाई में

**First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author*

नीति में टोटका
अहंकार भाषण में
आचरण में खोट हर हफ्ते मैंने विरोध किया
सचमुच स्वाधीन हो जाने का इतना भय
एक दास जाति में।[1]

'आत्महत्या के विरूद्ध' शीर्षक संग्रह की कविताएं सरसरी तौर पर खबरों की रपट मालूम पड़ती है। पर यह खबर सिर्फ खबर न होकर समाज में मनुष्य की बदलती जीवन-स्थितियों की तलाश है। जहाँ समाज-व्यवस्था के बीच साधारण मनुष्य अरक्षित और असहाय होकर भी मानवीय गरिमा हेतु संघर्ष करने को तैयार है। संग्रह का प्रकाशन वर्ष (1967) आजादी के बाद के बीस बरसों की बद से बदतर हो जाने की कहानी बयां करता है। वे कौन से हालात हैं जिन्होंने इन बीस बरसों के दरम्यान आम मतदाता को उसकी आशाओं और आकांक्षाओं से परे धकेलकर नारकीय जीवन या गुलाम की जिंदगी जीने को बाध्य किये हुए हैं। जहाँ असहायता और भयावहता का साम्राज्य पसरता जा रहा-

बीस वर्ष
खो गये भरमे उपदेश में
एक पूरी पीढ़ी जनमी पली पुसी क्लेश में
बेगानी हो गयी अपने ही देश में
वह
अपने बचपन की
आजादी
छीनकर लाऊँगा।

फिर बीस साल बाद
एक संयोग से
मैं वह कहूंगा जो
बीस साल से सच था

बीस साल
धोखा दिया गया
वहीं मुझे फिर कहा जायेगा विश्वास करने को[2]

*First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author

खबरों का आलम यह है कि जीते जी आम मनुष्य की स्थिति-परिस्थिति कोई खबर नहीं। जहां अभावग्रस्त लोगों की मृत्यु ही खबर बन पाती हे लेकिन लगातार मृत्यु की ओर बढ़ती उनकी जीवन परिस्थितियाँ खबर नहीं बन पाती। रघुवीर सहाय की कविताओं में यह खबरधर्मिता सर्जनात्मक है। रघुवीर सहाय का पत्रकारिता से गहरा नाता रहा है, इस कारण कभी-कभी उनकी कविता पर अखबारी भाषा की बात भी चलताऊ ढंग से चेंप दी गई है। पर वे पत्रकार और साहित्यकार की हकीकत से पूर्णतः वाकिफ है, उनकी सीमाओं और क्षमताओं के साथ। बकौल रघुवीर सहाय-"पत्रकार और साहित्यकार में कोई अंतर है क्या? मैं मानता हूँ कि नहीं। इसलिए नहीं कि साहित्यकार रोजी के लिए अखबार में नौकरी करते हैं, बल्कि इसलिए कि पत्रकार और साहित्यकार दोनों नये मानव-संबंधों की तलाश करते हैं। दोनों ही दिखाना चाहते हैं कि दो मनुष्यों के बीच नया संबंध क्या बना। दोनों के उद्देश्य में पूर्ण समानता है। कृतित्व में समानता कमोबेश है। पत्रकार जिन तथ्यों को एकत्र करता है उनको क्रमबद्ध करते हुए उन्हें उस परस्पर संबंध में विच्छिन्न नहीं करता जिससे कि वे जुड़े हुए और क्रमबद्ध हैं। उसके ऊपर तो वह लाजमी होता है कि वह आपको तर्क से विश्वस्त करे कि यह हुआ तो यह इसका कारण है, ये तथ्य है, और यह समय, देश, काल परिस्थिति आदि जिनके कारण ये तथ्य पूरे होते हैं। साहित्यकार इससे भिन्न कुछ करता है। साहित्यकार के लिए तथ्यों की जानकारी उतनी ही अनिवार्य है जितनी पत्रकार के लिए है परंतु उन तथ्यों का गतानुगत क्रम उसके लिए अवश्य नहीं है, वह उसको उलट-पुलट सकता है। पत्रकार के लिए यथार्थ वही है जो संभव हो चुका है। साहित्यकार के लिए वह है जो संभव हो सकता है।[3]

रघुवीर सहाय पत्रकारिता और कवि के बीच संबंधों को लेकर सतर्क है। इसी कारण मुश्किलें भी उनके सामने बार-बार आती है। जहाँ उनके लिए सबसे मुश्किल और एक ही सही रास्ता है कि मैं सब सेनाओं में लड़ूँ-किसी में ढ़ाल सहित किसी में निष्कवच होकर मगर अपने को अन्त में मानूं सिर्फ अपने मोर्चे पर हूँ। अपने भाषा के शिल्प के और उस दो तरफा जिम्मेदारी के मोर्चे पर जिसे साहित्य कहते हैं। उनके यहाँ हर रचना सपना अपने व्यक्तित्व को बिखरने से बचाने का प्रयत्न है।[4]

'आत्महत्या के विरूद्ध' शीर्षक कविताएं भारतीय राजनीति के लहराते जंगल से हमें रूबरू कराती हैं। आज राजनीतिक प्रभाव क्षेत्र से समाज का कोई भी अंग अछूता नहीं। जनता के प्रतिनिधि जनता से ही बेखबर है संसद से लेकर सड़क तक जितनी लोकतांत्रिक प्रतिनिधि संस्थाएं है उनका जनता की समस्यओं से कुछ लेना-देना नहीं है। हालात यहाँ यह है -

सिंहासन ऊँचा है सभाकक्ष छोटा है
अगणित पिताओं के
एक परिवार के
मुंह बायें बैठे हैं लड़के सरकार के

*First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author

लूले काने बहरे विविध प्रकार के
हल्की सी दुर्गन्ध से भर गया है सभाकक्ष[5]

नेता, पदाधिकारियों का हर दिन मनुष्यय से एक दर्जा नीचे रहने वालों की जमात के दर्द से कोई वास्ता नहीं है। यहाँ आम आदमी की मौत भी तमाशा है। ऐसी परिस्थिति में कवि की जद्दोजहद राजनीतिक विद्रूप के तहत उपजी उस अमानवीय स्थिति से पाठकों को रूबरू कराना है। पर यह रूबरू होना किसी धमाके की तरह न होकर एक सधे ढंग से है। कवि के अनुसार "मैं उन लोगों के बारे में बहुत आश्वस्त नहीं हूँ जो कि कहते हैं कि आप असहमति इस धमाके से करिये कि आप मर जायें- बिना कोई बात कहें और वहीं तमशा सब देखें।"[6] यह अनायास नहीं कि-

कितना अच्छा था छायावादी
एक दुख लेकर वह एक गान देता था
कितना कुशल था प्रगतिवादी
हर दुख का कारण वह पहचान लेता था
कितना महान था गीतकार
जो दुख के मारे अपनी जान लेता था
कितना अकेला हूँ मैं इस समाज में
जहाँ सदा मरता है एक और मतदाता।[7]

इस भारतीय आम मतदाता की जद्दोजहद रघुवीर सहाय के रचना केन्द्र में है। जहाँ हालात ये बन चुके हैं कि इस देश में स्वाधीनता शब्द का अवमूल्यन तंत्र के स्तर पर हुआ है। तंत्र को स्वाधीन व्यक्ति से परहेज है, क्योंकि स्वाधीन व्यक्तियों की अधिकता किसी भी तरह से सत्ता के हित में नहीं। वहाँ तो शर्त ही यह है कि आप मुझे अपनी स्वाधीनता दीजिए हम आपको नागरिकता का दर्जा देंगे। जाहिर तौर पर हम अपनी आजादी का एक हिस्सा इसलिए देते हैं कि वह समाज का और राज्य का प्रबंध करे, तो इस प्रकार सत्ता के और हमारे बीच में एक रिश्ता बनता है। वह हमेशा तनाव का रिश्ता होगा और जनता इस रिश्ते को समझ नहीं पाती या उसे इस रिश्ते को समझने नहीं दिया जाता। कवि का सब कुछ के बावजूद इस जनता से एक खास रिश्ता है-

"क्योंकि आज भाषा ही मेरी एक मुश्किल नहीं रही
एक मेरी मुश्किल है जनता
जिससे मुझे नफरत है सच्ची और निस्संग
जिस पर कि मेरा क्रोध बार-बार न्योछावर होता है।
हो सकता है कि कोई मेरी कविता आखिरी कविता हो जाये
मैं मुक्त हो जाऊँ।"[8]

*First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author

यह मुक्ति की छटपटाहट एक सहृदय कवि के मन में व्याप्त वह टीस है जो आम जतना के दु:ख-दर्द से उपजी है। पर यहाँ असहायता नहीं बल्कि समाज और सत्ता में व्याप्त आतंक से मुठभेड़ है। साथ ही एक उद्धाम जिजिविषा भी भविष्य की सार्थकता के प्रति। रघुवीर सहाय के चिंतन क्रम में समाज को समझने-बुझने की प्रक्रिया इतनी गहन है कि वहाँ समाज को समझने का मतलब यह है कि समाज के मनुष्य और मनुष्य के बीच जितने गैर-इंसानी रिश्ते हैं उनकी समझ और कहाँ से वे पैदा होते हैं उनकी समझ और उनकी जड़ों तक पहुँच, इतिहास की समझ। यह समझ ही कवि की अभिव्यक्ति को यह क्षमता देती है कि सत्ता की हनक और उसके आतंक के साधारण मतदाता पर पड़ने वाले प्रभाव को देख-दिखा सके जहाँ-

"कितना असान है नाम लिखा लेना
मरते मनुष्य के बारे में क्या करूँ क्या करूँ मरते मनुष्य का
अन्तरंग परिषद में पूछकर तय करना कितना
आसान है कितनी दिलचस्प है नेहरू की
आशंसा पाटिल की भर्त्सना कथा
कितनी घुटन के अन्दर घुटन के
अन्दर घुटन से कितनी सहज मुक्ति।"[9]

स्वाधीनता संग्राम भारत के अमा जन की मुक्ति का संग्राम था। तमाम सपने जोड़े और बुने गये थे आजाद भारत के लिए। पर आजादी के बाद के बीस बरसों के दरम्यान ही उसकी सींवन दरकने लगी। आधुनिक भारत को सजाने-संवारने के नाम पर बहुत सारी योजनाओं और राजनेताओं के भाषणों की घुट्टी भी इस होने वाले मोहभंग से निजात नहीं दिला पाई। हालात यह बने कि देश का बुद्धिजीवी तबका इसे लेकर इस कदर व्यथित है कि-

देश की व्यवस्था का विराट वैभव
व्याप्त है चारों ओर
एक कोने में दुबक ही तो सकता हूँ
सब लोग जो कुछ रचाते है उसमें
केवल अपना मत नहीं दे ही तो सकता हूँ
वह मैं करता हूँ
किसी से नहीं डरता हूँ
अपने आप और बेकार।"[10]

यह उस आजाद भारत की हकीकत है जिसे वैश्विक मानचित्र पर अभी आजाद हुए कुल बीस वर्ष हुए हैं और साधारण मतदाता सत्ता की भुलभुलैया में इस कदर भ्रमित हो चुका है कि वह दिन-प्रतिदिन

*First Author, **Corresponding Author, ***Co-Author

इस दमघोंटू माहौल में तिल-तिल मरने को विवश है। समाजवाद की बयार उस तक नहीं पहुंचती। चर्चा जरूर गरम है संसद से सड़क तक के सत्ता के गलियारों में कि आम जनता की फिक्र में वे किस कदर हलकान है। पर यह चर्चा है कैसी जहाँ-

"बीस बड़े अखबारों के प्रतिनिधि पूछे पचीस बार
क्या हुआ समाजवाद
कहे महासंघपति पचीस बार हम करेंगे विचार
आँख मारकर पचीस बार व हँसे वह, पचीस बार
हँसे बीस अखबार
एक नयी ही तरह की हँसी यह है।[11]

यह हँसी दशहत पैदा करती है। राजनीतिक गलियारों में होने वाली चर्चा का आम जनता से कोई वास्ता नहीं। रघुवीर सहाय उन चंद कवियों में से है जहाँ स्वाधीनता के विद्रूप के बीच उनकी रचना आकार लेती है। आत्महत्या एक गुमनामी की चुपचाप होने वाली कार्यवाही है। जिसे गोल-मटोल शब्दों द्वारा सभ्य समाज में फारिग कर दिया जाता है। पर यह आत्मकथा कितनी महीन और सोची-समझी प्रक्रिया है कवि की सतर्क निगाह इस पर है। सिर्फ सांसो का रूक जाना या देंह का मिटना ही आत्महत्या नहीं वरन् आत्महत्या तो वह भी है जहाँ लोग जिंदा लाश की तरह बुत बने चुपचाप स्वयं को नियति के हवाले कर देते हैं। पर यह नियति शब्द खोखला है राज-समाज द्वारा आम जनता पर आरोपित किया गया है। आत्महत्या के इस पाखंड के खिलाफ, आम जनता को तिल-तिल कर मरने की ओर अग्रसर करने वाली सत्ता के खिलाफ कवि का प्रतिरोध इस कदर है कि-

कुछ होगा कुछ होगा अगर मैं बोलूंगा
न टूटे न टूटे तिलिस्म सत्ता का मेरे अन्दर एक कायर
टूटेगा टूट
मेरे मन टूट एक बार सही तरह
अच्छी तरह टूट झूठमूठ अब मत रूठ।[12]

रघुवीर सहाय के यहाँ समाज और राजनीति में भीतर-भीतर चल रही साजिश को खबर की शक्ल में पेश किया गया है पर वह खबर मात्र सूचना प्रदान करने तक ही सीमित नहीं। वरन् वहाँ घटनाओं के घटने के कारणों की तलाश है। एक ऐसा समाज जहाँ आजादी सिर्फ अभिजत वर्ग एक सीमित होकर रह गई है और एक आम मतदाता रोज मरने को बजबूर है। यह मजबूरी क्यों और किन दबावों के चलते उत्पन्न हो रही, रघुवीर सहाय की कविता इसका मुकम्मल बयान है। देश की विराट एवं भव्य व्यवस्था से उत्पन्न वैभव किस कदर आम जन को दिग्भ्रम की स्थिति में डाले हुए हैं उनकी रपट है रघुवीर सहाय की कविता।

संदर्भ सूची

1. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 84
2. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 18, 83, 2
3. लिखने का कारण, रघुवीर सहाय, पृ. 177
4. आत्मकथा के विरूद्ध, भूमिका
5. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 16-17
6. पूर्वग्रह, अंक नवम्बर-दिसम्बर 1976, पृ. 30
7. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 69
8. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 71
9. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 22
10. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 11
11. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 12
12. आत्मकथा के विरूद्ध, पृ. 20